Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अजेय की कविताएं

इन सपनों को कौन गाएगा

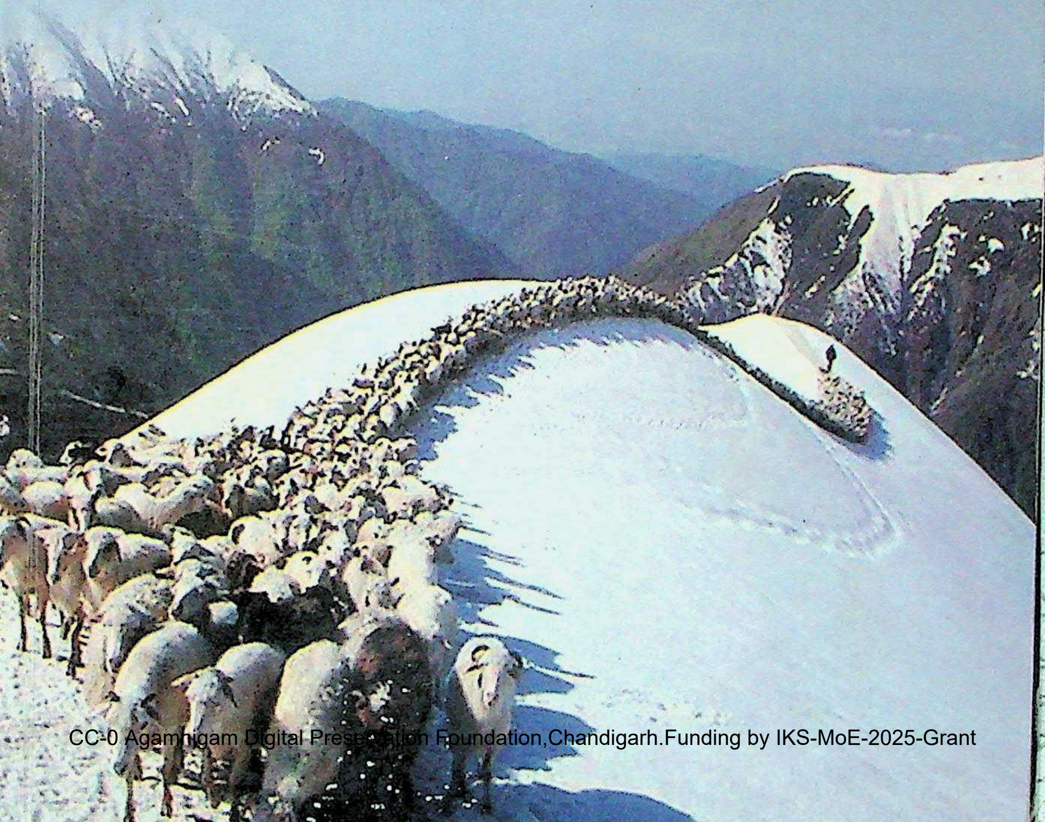

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन सपनों को कौन गाएगा

(कविता-संग्रह)

प्रिय भाई अग्निशेखर को सादर!
14.x.2012

अजेय

अग्निशेखर और क्षमा कौल द्वारा पुस्तक भेंट

G.M. College of Education Bantalab Raipur, Jammu
Acc No. 9123
Dated 21.12.2023

दख़ल प्रकाशन, ग्वालियर

302, आई-3, विंडसर हिल्स, सिटी सेंटर एक्सटेंशन, ग्वालियर, मध्यप्रदेश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन सपनों को कौन गाएगा
(कविता-संग्रह)
अजेय

प्रथम संस्करण : 2013

मूल्य : ₹150

कॉपीराइट : लेखक

आवरण सज्जा : महेश वर्मा

प्रकाशक
दख़ल प्रकाशन
302, आई-3, विंडसर हिल्स, सिटी सेंटर एक्सटेंशन
ग्वालियर - 474002, मध्यप्रदेश
ई मेल : dakhalprakashan@gmail.com

मुद्रक : अरिहंत ऑफसेट, जनकपुरी, नई दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये कविताएं...

माँ के लिए, जो चली गईं,

और महान पृथ्वी के लिए जिसकी मिट्टी का स्वाद कभी न भूलूंगा,

जिस के पानी में खूब भीगा हूं, जिसकी तपिश को दिल के एकदम करीब से महसूस किया है !

और उस महान पृथ्वी के आख़िरी छोर पर बचे रह गए कोमल वनस्पतियों, निरीह पशुओं और बेबस मानुष के लिए !

और नाना जी, किशन भाई और प्रिय स्वामी के लिए जिन की सोहबत में मेरे अंदर बेपरवाही और कविताई के प्रारम्भिक बीज अंकुरित हुए

और पिता जी के लिए जिन्होंने मुझे हिंदी सिखाई और सत्यपाल सहगल के लिए जिन से मैं कविता सीखी और कवि मोहन साहिल, सुरेश सेन निशांत व अनूप सेठी के लिए जिनकी कविताओं ने मुझे कविता लिखें के लिए खूब प्रेरित किया

और

उन सभी वरिष्ठ साहित्यकारों के लिए जिन्होंने इन कविताओं को पसंद किया और उन के लिए भी जिन्होंने इन्हें नज़रअंदाज़ किया !

और

यह किताब आप सब पाठकों के लिए, जिन के हाथों में यह है...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता से पहले थोड़ी सी बातें...

देश के इस अनजान कोने में रहते हुए कविताएं लिख रहा हूं। मुझे नहीं पता कि मैं जिस पहाड़ से सिर टकरा रहा हूं वह कितना दुरूह, दुर्भेद्य और ढीठ है कि मेरी कविता की मासूमियत, उस का अबोधपन, उस का 'सत्त' उस पहाड़ पर किस तरह के 'इम्प्रेशनज' छोड़ेगा? नहीं जानता मेरी कविता कहां तक पहुंच रही है, कहां तक पहुंच सकती है और क्या असर पैदा कर सकती है? पर मैं इनके द्वारा अपने छोटे से इलाके के कुछ प्रतिबद्ध लोगों को रिसेंसिटाईज कर पाऊंगा... खासकर के उन लोगों को, जिनके पास कुछ सपने थे, जो आज क्षत-विक्षत हैं... यक़ीन ! क्योंकि मैं जानता हूं कि वे सपने सच्ची नीयत से देखे गए थे और मुझे अपनी उस 'आदिम' नीयत पर भरोसा है जो आज के संदर्भों में आऊटडेटेड, डीफंक्ट और निरर्थक हो चुकी है। वह नीयत थी इस सभ्यता के अंतिम छोर पर जीने का उपक्रम कर रहे, डरे हुए, हारे हुए मानुष में 'सत्त' की कुछ जिंदा तरंगें बचा रखें की। हमारी इस नीयत को इधर की हवाओं ने बारहा डगमगाया है। हमारी अपनी ही सभ्यता से उत्पन्न अंधड़ों में हम उस नीयत को खोते चले गए हैं और मेरा भावुक कवि-मन इन कविताओं में अपनी उस खोई हुई नीयत को 'रिकूव' करना चाहता है। यह अंधविश्वास करें जैसा लग सकता है, लेकिन अंधविश्वास से सर्वथा उलट है।

मेरे मन में शुरू से ही कोई ऐसा विचार नहीं था (न ही ऐसा कोई स्वप्न) कि इतनी जल्द मेरी कविताएं पुस्तकाकार संकलित हो जाएंगी। मित्र और परिजन आग्रह करते और मैं झेंप कर रह जाता - क्या मेरी कविताएं संकलित होने लाय्मक हैं? मेरे इस हीनता बोध और स्वप्नलाघव को मेरी पूरी मित्रमंडली में हिक़ारत से देखा जाता है...ख़ैर, जैसे-जैसे मैं कविताएं छपवाने लगा, इंटरनेट पर उन्हें शेयर करें लगा, नए लोगों से परिचय हुआ, प्रतिष्ठित साहित्यकारों से मिला, संग्रह के लिए दबाव बढ़ता ही गया। बहुतों ने प्रकाशक भी सुझाए। ख़ासे नामचीन प्रकाशक। इस दबाव ने मुझे इतना 'फुला' दिया कि खुद को संग्रह छपवाने लायक कवि मानने लग पड़ा हूं। मैंने प्रकाशकों से संपर्क किया। उन्होंने मेरी कविताओं को बेहद पसंद किया लेकिन....! छोड़िए इस पर एक कथा लिखी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाए कभी। तो इस उपक्रम में सबसे पहला प्रपोज़ल जो मुझे लगा कि दिल से आया है, अशोक कुमार पाण्डेय का था। सुझाव को-ओपरेटिव प्रकाशन शुरू करें का था। मेरे लिए यह दिलचस्प था। मैं पाण्डुलिपि टाईप करना शुरू कर दिया। फिर एक दिन अशोक ने कहा भाई, पहली योजना खारिज, हम अपना प्रकाशन शुरू करेंगे और उम्मीद दिलाई कि हम मार्केटिंग कर पाएंगे। मैंने कहा कोई दिक्कत नहीं, यह भी अच्छा विचार है।

मेरे पास छोटी-बड़ी कुल सौ से ऊपर कविताएं थीं। सर्वप्रथम मैं खुद एक चयन तैयार किया। इसमें मैंने कुछ बीसेक कविताएं अलग रखीं। वह इसलिए कि आज की हिन्दी कविता के चालू मुहावरों की बड़ी गहरी छाया उनमें दिखती थी। मैं इससे सायास बचना चाह रहा था। लेकिन हमें 60 की संख्या तक आना था, तो 80 कविताओं की पाण्डुलिपि बारी-बारी से महेश चंद्र पुनेठा और अशोक के पास भेजी गई, आगामी स्क्रीनिंग के लिए। यह बड़ा रोचक था कि दोनों ही कवियों ने प्रायः वही 15-16 रचनाएं अलग कीं। चौंकने वाली बात यह थी कि जिन कविताओं को मैं काफी कमजोर मानता रहा था वे तीसरी स्क्रीनिंग के बाद भी बची रहीं। ग़ौर करने पर मालूम हुआ कि दोनों कवियों ने कथ्य की दृष्टि से चयन किया था जबकि मैं शिल्प के आधार पर सोच रहा था। इस तिहरी छंटनी का परिणाम यह रहा कि मैं एक बहुत बड़ी ग़लती करें से बच गया। आज मुझे अहसास है कि आज तक का मेरा अनाप-शनाप लिखा हुआ यदि समाज के पास एकाग्र रूप में जा ही रहा है तो बतौर एक 'शो पीस' क्यों जाए ? क्यों न एक वैचारिक दख़ल की तरह जाए ? और अशोक द्वारा तैयार इस अंतिम सूची में फकत एक कविता - गांव में चक्का तलाई- जोड़ कर मैं पूरी तरह आश्वस्त एवं संतुष्ट हूं। इस तरह से मेरा ''दख़ल'' से जुड़ना सार्थक होता है।

अजेय

2 सितम्बर, 2012

केलंग, हिमाचल प्रदेश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आभार

प्रिय दीदी, पोंकी, काकू ,शामू, सुरेश विद्यार्थी, घरसंगी, शशि परशीरा, कुलजीत क्रोफा, रिंकू, निरंजन, ईशिता, उरसेम, अशेष, योजना रावत, माधवी शर्मा गुलेरी, सुशीला पुरी, सुकृता पाल कुमार, रति सक्सेना, निरुपमा दत्त, पद्मा सचदेव, रमेश चंद्र शाह, चंद्रकांत देवताले, विजय कुमार, ज्ञानरंजन, वाचस्पति, मंगलेश डबराल, शेखरपाठक, अजय लाहुली, शशि भूषण, सतीश लोप्पा, प्रमोद रंजन, प्रदीप सैनी, आत्मा रंजन, रणवीर शाशी, सुनीता, विक्रम, अग्निशेखर, मधुकर भारती, सुनील ग्रोवर सहित उन सभी परिजनों व मित्रों का जो मेरी कविताओं को लेकर हमेशा उत्सुक रहे !

पत्नी सविता और बिटिया क्षणिका का जिन्होंने मेरे कवि को ख़ामोशी से झेला।

पहल, ज्ञानोदय, तद्भव, वसुधा, अकार, अन्यथा, उन्नयन, कृतिओर, कथन, पब्लिक एजेंडा, जनसत्ता, प्रभात खबर, कृत्या, अभिव्यक्ति, कथादेश ,उद्भावना, आकण्ठ, सर्जक, विपाशा, पर्वत राग आदि उन समस्त हिन्दी पत्रिकाओं का जिन्होंने यहां संकलित कविताएं छापीं।

तमाम अनुवादकों का जिन्होंने मेरी कविताएं पसंद की और मराठी, बांग्ला, मलयालम, अंग्रेजी, नेपाली आदि भाषाओं में अनूदित कीं।

संत कवि मिलारेपा, कबीर, मुक्तिबोध, विजयदेव नारायण साही, शिव कुमार बटालवी, अवतार सिंह पाश, सुरजीत सिंह पातर और कुमार विकल का जिनकी कविताओं के सहारे मैंने अपने कठिनतम दिन बिताए।

अशोक कुमार पाण्डेय और शिरीष कुमार मौर्य का जिनकी स्नेहिल ज़िद के बिना यह किताब कभी न निकल पाती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

प्रार्थना	9
आख़िरी बात	10
कहीं यह आख़िरी कविता न हो	11
फुलमून पार्टी	13
लैम्प पोस्ट के नीचे बैठी औरत	15
भोजवन में पतझड़	17
ब्यूँस की टहनियां	19
आज कितनी अच्छी धूप है	21
खुद अपने ही खिलाफ	23
आज जब वह जा रही है	25
कविताओं के बारे में कविताएं	27
छतड़ू में कैम्प फायर	29
'ट्राईबल' में स्की फेस्टिवल	31
दोर्जे गाईड की बातें	33
आग्र के इलाके में आओ !	36
आग के इलाके का आदमी	38
आर्कटिक वेधशाला में कार्यरत वैज्ञानिक मित्रों के कुछ नोट्स	40
पूछो सूरज से क्या वह आएगा ?	48
आस पास एक पृथ्वी चाहिए	50
एक नदी जिसे हम पीना चाहते हैं	51
हम चूक गए कितनी ही नदियां	52
बरफ़	54
काम	55
नई धार लिए काम पर लौटना	56
काम की जगहोंपर कुछ हादसे	57
भीतर उगा हुआ आदमी	60

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तलब	62
शिमला: कुछ स्मृतिस्थल	63
शिमला का तापमान	67
चींटियां	73
निरामिष	76
अतिजीवन	77
बुद्ध न हो पाना	79
पहाड़	81
पहाड़ी ख़ानाबदोशों का गीत	83
पहाड़ के पीछे छिपा होगा इसका इतिहास	85
इन सलोनों की भाषा सीख लो	88
गांव से लौटता कवि	89
एक आदमी होता था	91
एक अच्छा गांव	92
इस गांव को उन बच्चों की नज़र से देखना है	94
नीचे देखते हुए चलना	96
बातचीत	98
अपनी आंखों देखता हूं	105
जी सकते थे झूम झूम	107
ढालपुर कहलेज से लौटती लड़कियां	109
माँ हर्पीज और आदिम चांदनी	111
तुम्हारी ज़ेब में एक सूरज होता था	114
कविता नहीं लिख सकते	116
केलंग - सर्दियां 2004	119
मैत्रेय, क्या तुम भी राजा की तरह आओगे ?	122
रातों रात चलने वाले	124
मेरा आखिरी रंग भी ले जाओ	126
एक बुद्ध कविता में करुणा ढूंढ रहा है	127
इन सपनों को कौन गाएगा ?	132

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रार्थना

ईश्वर
मेरे दोस्त
मेरे पास आ !
यहां बैठ
बीड़ी पिलाऊंगा
चाय पीते हैं

इतने दिन हो गए
आज तुम्हारी गोद में सोऊंगा
तुम मुझे परियों की कहानी सुनाना

फिर न जानें कब फुर्सत होगी !

1992

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आख़िरी बात

आख़िरी बात तो अभी कही जाी है
यह जो कुछ कहा है

आख़िरी बात कहें के लिए ही कहा है

आख़िरी बात तो दोस्त
बरसात की तरह कही जाएगी
बौछारों में
और जो परांले चलेंगे
पिछली तमाम बातें उनमें बह जाएंगी

बातों-बातों में बातों की
बेबुनियाद इमारतें ढह जाएंगी
फिर उसके बाद कोई बात कहें की
ज़रूरत नहीं रह जाएगी

आख़िरी बात कह डालें के लिए ही
जिए जा रहा हूं
जीता रहूंगा
आख़िरी बात कहे जाने तक।

1999

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं यह आख़िरी कविता न हो

दोस्तो ध्यान से सुनना
ये आप्त वचन
शुद्ध हृदय से बोल रहा हूं
आख़िरी बार।

तमाम जनतांत्रिक माहौल और उदारवादी अहसासों के बावजूद
पता नहीं क्यों डर रहा हूं
कि इसके बाद कोई कविता नहीं लिखी जाएगी
कि इसके बाद जो कुछ भी लिखा जाएगा
वह आवेदन होगा
तय रहेगा जिस का पहले से एक प्रपत्र
तय रहेगीं विवरणों की सीमाएं
छोटे-छोटे कलमों में आप केवल
हां या 'नहीं' लिख सकेंगे
बड़ी हद 'लागू नहीं' लिख लीजिए
टीप के लिए नहीं बनें होंगे हाशिए

याचिकाएं होंगी
जिन्हें दायर करने के लिए
आपकी एक हैसियत चाहिए
और कोई अधिसूचना या
तयशुदा क़ानूनी शब्दावली में
कोई अध्यादेश जिसे फौरी तौर पर पढ़ें से
लगे कि सचमुच ही जनहित में जारी किया गया है!
इसके बाद कुछ लिखा जाएगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो हलफ़नामें और अनुबंध लिखे जाएंगे
और भनक भी नहीं लगेगी
कि आपने अपने इन हाथों से अपनी कौन सी
ज़रूरी ताक़तें रहन लिख दीं!

इसीलिए दोस्तों ध्यान से सुनना
बड़ी मेहनत से लिख रहा हूं
अपने नाख़ून छील कर
अपनी ही पीठ पर
गोद रहा हूं ये तल्ख़ तेज़ाबी अक्षर

तुम ध्यान दोगे अगर
तो मेरी दहकती पीठ पर ठंडक उतर आएगी
दूना-चौगुना रक्त दौड़ेगा धमनियों में
स्वस्थ मज्जा से
मेरी खोखली रीढ़ भर जाएगी
तुम्हारी सामूहिक ऊर्जा से आविष्ट होगा
मेरा स्नायु तंत्र
तन कर सीधी खड़ी हो जाएगी मेरी संक्रमित देह
मौसम की मनमर्ज़ियों के ख़िलाफ़
चमकेंगे नए हरूफ़ मेरी बेचैन छाती पर
यही मौका है दोस्तो ध्यान से सुनना
तनमय होकर
कहीं यह आख़िरी कविता न हो !

1990

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फुलमून पार्टी

(जिमि हेंड्रिक्स और स्नोवा बार्नो के लिए)

इस कुंआरी झील में झांको
किनारे किनारे
कंकरों के साथ खनकती
तारों की रेज़गारी
सुनो
लहरों पर तैरता आ रहा
किस्तों में चांद
छलकता थपोरियां बजाता
तलुओं और टखनों पर

पानी में घुल रही
सैंकड़ों अनाम खनिजों की तासीर
सैंकड़ों अदृश्य वनस्पतियां
महक रही हवा में
महसूस करो
वह शीतल विरल वनैली छुअन
कहो

कह ही डालो
वह सबसे कठिन कनकनी बात
पच्चीस हज़ार वाट की धुन पर
दरकते पहाड़
चटकते पठार
रो लो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाच लो
जी लो

आज तुम मालामाल हो
पहुंच जाएंगी यहां
कल को
वही सब बेहूदी पाबंदियां !

चंद्रताल, 11.7.06

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लैम्प पोस्ट के नीचे बैठी औरत

वहां जो औरत बैठी थी
उसने होंठ रंग रखे थे खूब चटख़
और नाख़ून भी
उस की गरदन पर काली झुर्रियां बन रही थीं
और पसीना चुहचहा रहा
जबरन घुंघराले किये बालों से

वहां जो औरत बैठी थी
उस के चारों ओर भिनभिना रहे थे बच्चे
एक दूसरे को छेड़ते, खींचते
धकियाते, गिराते, रुलाते

वहां जो औरत बैठी थी
उस की आंखों से भाग कर
चमक सितारों में खो गई थी
उसके चेहरे पर लगा था ग्रहण
और चांद मुस्करा रहा

उस के भीतर के तमाम परिंदे
कर रहे थे कूच की तैयारी
अपनी भरपूर चहचहाटों के साथ
भोर होते ही

वहां जो औरत बैठी रहेगी
उस की आर्द्रता सोख ले जाएंगे बादल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हवाएं चुरा लेंगी उसके सुनहरे सपने
और दिन किलते ही
सूरज छीन लेगा उसकी रही सही गरमाईश

यह धरती ही थामें रहे सम्भवतः
जैसे-तैसे
उस चुक रही औरत का बोझ
शाम तक

वहां जो औरत बैठी है
उसे बहुत देर तक
बैठे नहीं रहना चाहिए
यों सज धज कर
गुमसुम - चुपचाप

मांली, अगस्त, 2000

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भोजवन में पतझड़

हवा में घुल गया शीत
बेशरम ऐय्यार

छीन रहा वादियों की हरी चुनरी !
लजाती ढलों
हो रही संतरी
फिर पीली
और भूरी !

मटमैला धूसर आकाश
नदी पारदर्शी
संकरी !

कांप कर सिहर उठी सहसा
कुछ बदरंग पत्तियां
छूट उड़ी शाख से
सकुचाती
मेरी खिड़की की कांच से
चिपक रह गई एकाध !

दरवाज़े की झिर्रियों से सेंध मारता
आख़िरी अक्तूबर का
वह बदमज़ा अहसास
जबरन लिपट गया मुझ से !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेटी रहेगी
एक कुनकुनी उम्मीद
मेरे बगल में
एक ठंडी मुर्दा लिहाफ़ के नीचे
कि फूट जाएगीं कोंपलें
लौट आएगी
अगले मौसम तक
भोजवन में जिंदगी .

नैनगार,18.10.2005

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ब्यूंस की टहनियां

(आदिवासी बहनों के लिए)

हम ब्यूंस की टहनियां हैं
दरातों से काट छांट कर
सुंदर गट्ठरों में बांध कर
हम मुंडेरों पर सजा दी गई हैं

खोल कर बिछा दी जाएंगी
बुरे वक़्त में
हम छील दी जाएंगी
चारे की तरह
जानवरों के पेट की आग बुझाएंगी

हम ब्यूस की टहनियां हैं
छिल कर
सूख कर
हम और भी सुंदर गट्ठरों में बंध जाएंगी
नए मुडेरों पर सज जाएंगी
तोड़ कर झोंक दी जाएंगी
चूल्हों में
बुरे वक़्त में
ईंधन की तरह हम जलेंगी
आदमी का जिस्म गरमाएंगी

हम ब्यूंस की टहनियां हैं
रोप दी गईं रूखे पहाड़ों पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोड़ दी गईं बेरहम हवाओं के सुपुर्द
काली पड़ जाती है हमारी त्वचा
ख़त्म न होने वाली सर्दियों में
मूर्छित, खड़ी रह जातीं हैं हम
अर्ध निद्रा में
मौसम खुलते ही
हम चूस लेती हैं पत्थरों से
जल्दी-जल्दी खनिज और पानी

अब क्या बताएं
कैसा लगता है
सब कुछ झेलते हुए
ज़िंदा रह जाना इस तरह से
सिर्फ़ इसलिए
कि हम अपने कंधों पर और टहनियां ढो सकें
ताजी, कोमल, हरी-हरी
कि वे भी काटी जा सकें बड़ी होकर
खुरदुरी होने से पहले
छील कर सुखाई जा सकें
जलाई जा सकें
या फिर गाड़ दी जा सकें किसी रूखे पहाड़ पर
हमारी ही तरह

हम ब्यूंस की टहनियां हैं
जितना चाहो दबाओ
झुकती ही जाएंगी
जैसा चाहो लचकाओ
लहराती रहेंगी
जब तक हम में लोच है

और जब सूख जाएंगी
कड़क कर टूट जाएंगी

2004

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज कितनी अच्छी धूप है !

(हैलिकाप्टर से 'पीज' गांव के ऊपर से उड़ते हुए)

छतों पर खींद रख दिए गए हैं सूखने के लिए
भेड़ें, गऊएं गांव से दूर निकल चलीं हैं
सप्ताह भर की बारिश ने
खूब नरम पत्तियां उगाईं होंगी
(हालांकि हरियाली दिख नहीं रही है इस ऊंचाई से)
आज धूप कितनी अच्छी है !

बुजुर्ग अलसा रहे हैं आंगन की सलेटों पर
अधेड़ औरतें छज्जों पर बतियाती बाल सुखा रही हैं
बच्चे कक्षाओं में लौट रहे प्रार्थना ख़त्म कर
उतर रहे युवक पीठ पर झोले लाद
और दयार के स्लीपर
युवतियां भी -
दूध की कैनियां, बालन की गठड़ियां
गांव की निचली ढलान पर
जहां बचा रह गया है थोड़ा सा जंगल
फिर नीचे ढाल पुर में तो बाज़ार ही बाज़ार है...

आज क्या कुछ बिकेगा ?
गुच्छियां
बोदि के फूल
चरस और थरड़े की थैलियां
कितना मुनाफ़ा होगा...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज बहुत अच्छी धूप है !
प्रार्थना से लौटते किसी एक बच्चे ने
ज़रूर सोचा होगा आज
कि क्यों गिरता जा रहा पहाड़
ढलान दर ढलान
टूट कर बिखरता जा रहा पहाड़
कि ख़ूब कस कर पकड़ रक्खूं
अपने पहाड़ को
अपनी नन्ही मुट्ठियों में ---

आज कितनी अच्छी धूप है !

2003

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुद अपने ही ख़िलाफ़

(बीमार माँ के बारे में एक कविता)

ठीक ठीक नहीं बता सकता
कि कितना सही-सही जानता हूं
मैं उस औरत को
जब कि उसे माँ पुकारने के समय से ही
उसके साथ हूं

आंचल पकड़ता
छातियों से चिपकता कभी
उचक कर पीठ पर उसकी गर्दन सूंघता

उस औरत को प्यार करना
मेरे स्मृति पुंज में
एक ख़त्म न हो वाली अवधि की तरह है
उसे माँ पुकारने से कहीं ज़्यादा लंबी
जबकि माँ पुकारना तो अंतरालों में रहा
वक्फ़ा-वक्फ़ा - जैसे
कौंधें होती हैं पल दो पल की

मैंने देखा है उसे
बचाती हुई खुद को
एक अंतहीन दबी हुई रुलाई से
हार कर टूट जाने से
बाल-बाल बचती हुई विक्षेप से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस भीषण समय में
ढोती हुई संतुलित होकर
पीठ पर अपना वह पुत्र
और तमाम अनाप-शनाप संस्कार
चुपचाप
प्रार्थनाएं करती हुई
उन सभी की बेहतरी के लिए
जो क्रूर हुए हर बार
खुद उसी के लिए

नहीं बता सकता
कि कहां था
उस औरत का अपना आकाश

नहीं बता सकता
कि क्या था
कि उस औरत की चांदनी रातों पर
सदा ही ग्रहण लगा रहा
बहुत असहज हो जाता हूं यह कहते हुए
कि इस बीमार औरत ने
अपने साथ सब कुछ हो जाने दिया
उन मौकों पर भी,
जब कि वह लड़ सकती थी

बहुत डर जाता हूं
इस सच को मानते हुए
कि यह औरत उन पापों का फल भोग रही है
जो उस ने खुद अपने साथ किए
खुद अपने ही ख़िलाफ़ !

पी-जी-आई, चंडीगढ, मई 2007

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज जब वह जा रही है

(माँ की अंतिम यात्रा से लौटें पर)

वह जब थी
तो कुछ इस तरह थी
जैसे कोई भी बीमार बुढ़िया होती है
शहर के किसी भी घर में
अपने दिन गिनती

वह जब थी
इस शहर को
और इस घर को
नहीं था कोई सरोकार
कि अपनी पीड़ाओं और संघर्षों के साथ
वह कितनी अकेली थी

कहां शामिल था खुद मैं भी
उस तरह से
उसके होने में
जिस तरह से कि इस अंतिम यात्रा में हूं

आज जब जा रही है वह
तो रो रहा है घर
स्तब्ध है शहर
खड़ा है कोई हाथ जोड़ कर
और कोई सरक गया है दुकान में मुंह फेर
कर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज जब वह जा रही है
भीड़ ने रास्ता दे दिया है उसे सहम कर

भारी भरकम गाड़ियां गुर्राना छोड़
दो पल के लिए एक तरफ हो गई हैं
चौराहे पर उस वर्दीधारी सिपाही ने भी
अदब से सलाम ठोक दिया है

आज जब वह जा रही है
तो लगें लगा है सहसा
मुझे
इस घर को
और पूरे शहर को
कि वह थी ---

वह थी
और अब
नहीं रही !

कुल्लू, 21.06.2007

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविताओं के बारे में कविताएं

वक्त आया है
हम खूब कविताएं लिखें
कविताओं के बारे में
इतनी कि
कविताएं हमारी ज़ेबों से निकल
बाज़ार में फैल जाएं
मूंगफली की रेड़ियों पर
चाय की थड़ियों पर
पंवाड़ी की पेटियों में
माचिस बीड़ी और सुपारी के साथ सजी नज़र
आएं

कि कविताएं
सरपट दौड़ती गाड़ियों में से कूद कर
चौक पर खड़ी हो जाएं
चिलचिलाती धूप में
तमाम राहगीरों को
अपनी अपनी लेन पर चलने के निर्देश दें

कि कविताएं
पुस्तकालयों की अलमारियां तोड़ भागती
धूल झाड़ती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गलियों, नुक्कड़ों, अड्डों और ढाबों में
घूमती बतियाती नज़र आएं -
कि हम ज़िंदा हैं
ज़िंदा रहना चाहतीं हैं
इनसानों की तरह इंसानों के बीच

कि कविताओं के बंडल
अख़बारों की तरह पहुंचे स्टालों पर
एक सनसनीख़ेज़ ख़बर
या नौकरी के किसी विज्ञापन की तरह
और टूट पड़ें नौजवानों के झुंड उन पर

कि चुनावी पर्चों की जगह बंटे कविताएं ही
चिपक जाएं कस्बों की दीवारों पर
गांव की किवाड़ों पर
और उड़ें कागज़ के जहाज़ बन कर
हवा और बारिश में
संवेदना की महक बिखेरें

वक़्त आया है
कि हम ख़ूब कविताएं लिखें
ज़िंदगी के बारे में
इतनी कि
कविताओं के हाथ थाम कर
ज़िंदगी की झंझटों में कूद सकें
जीना आसान बने
और कविताओं के लिए भी बची रहे
थोड़ी सी जगह
उस आसान जीवन में !

2003

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छतड़ू में कैम्प फायर

ऐसे ही बैठे थे
फायरप्लेस के आगे
हम पांच या छह जें
कि अचानक उतर आया जीजस
दीवार पर टंगी सूली से
चुपचाप शामिल हो गया
हमारी गपशप में

रात भर बतियाते रहे हम
अलाव तापते
बीयर के साथ
दुनियादारी और मौसम की बातें
बातें, फूलों, रंगों और कीट पतंगों की
बातें, आदमी और पैसे
और ताक़त से होते हुए
युद्धों की, हड़तालों, कर्फ्यू और दंगों की

हँसता रहा पैग़म्बर रात भर !

फिर सरूर में
पप्पू ने गिटार उठाई
शामू ने बांसुरी
मैंने सीटी और स्वामी ने ताली बजाई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और बहुत झूम कर ईश्वर के बेटे ने गाया
एक दिलकश जिप्सी गीत --

"वह मरा नहीं
वह सो रहा है
और मैं उसे देख नहीं सकता !"

1989

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ट्राईबल में स्की फेस्टिवल

सन-सन सर्र-सर्र
बर्फ़ पर
चटख झंडे
लाल पीले नीले
मर्जेंटा और पर्पल और फ्लारेसेंट बच्चे
पाउडर स्कीइंग
वाह जी वाह !

अभी कल ही तो पड़ी
पांच-छह फुट समझो
इस बार तो
कुल मिला कर बड़ी मस्ती है
उम्मीदें जगी हैं
बुजुर्गों ने कहा है बच जाएंगी फसलेन

बड़ा मंहगा होगा
नहीं शर्मा जी, यह 'इकुपमिंट'
इम्पोर्टेड---
अच्छा, स्मगल्ड है -
वाह जी वाह !

मनाली वाले हैं
दो चार इंस्ट्रक्टर
कुछ 'फोर्नर'
ये 'फोर्नर' भी बस ---
और ये छोकरू अपने,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके पीछे-पीछे ---

वैसे एक बात कहूं सर,
यह एडवेंचर और मस्ती --
स्वस्थ मनोरंजन है

'टानिक' कहो कांईड आफ---

वही तो,
हमारे ऋषि मुनि
क्या करते थे दुर्गम कंदराओं में -
एड्वेंचर तो
'हेल्दी थिंकिंग डिवेलप' करता है जांब---

'एक्जेक्टली सर !'

और पी के कैसे गच्च रहते हैं
यहां के लोग
पिछली बार याद है
कितना नाचे थे
कपूर साब
रात भर छंका ---
और कैसी प्यारी प्यारी लड़कियां आईं थीं
दारचा से
वाह जी वाह !
गिल साब का भांगड़ा
जगह नहीं थी
हाल में तिल धरने को
मैं तो डी स्साब से कहा
यह रौंक मेला लगे रहना चाहिए
ट्राईबल में
और क्या है टाईम पास

हां जी, हां !

रिवलिङ, मार्च 1998

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोर्जे गाईड की बातें

(गङ - स्तङ हिमनद का दृश्य देखते हुए)

इस से आगे
इस से आगे तो कुछ नहीं है सर !
यह इस देश का आख़िरी छोर है
इधर बगल में तिब्बत है
ऊपर की तरफ कश्मीर
उधर जहां सूरज डूब गया है अभी अभी
और जहां यह नदी भागती चली जा रही है
वहां जम्मू है
उधर बड़ी गड़बड़ है
गड़बड़ पंजाब से उठ कर कश्मीर चली गई है जनाब
लेकिन हमारे पहाड़ शरीफ़ हैं
सर उठा कर जीते हैं
सब को पानी पिलाते हैं
और दूर से इतने दिलकश दिखते हैं
पर ज़रा रुक कर देखो यहां---

नहीं सर,
वह वैसा नहीं है
जैसा कि अदीब लिखता है --
भोर की प्रथम किरणों की स्वर्णाभा
शंख धवल मौन शिखर
स्वप्न लोक, रहस्यस्थली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वगैरा वगैरा
जिसे हाथों से छू लेने की इच्छा रखते हो
वो वैसा ख़ामोश नहीं है
जैसा कि दिखता है

बड़ी हलचल है वहां दरअसल
बड़े-बड़े चट्टान
गहरे नाले और खड्ड
खतरनाक पगडंडियां है
बरफ़ के टीले और ढूह
भरभरा कर गिरते रहते हैं
गहरी खाईयों में
बड़ी ज़ोर की हवा चलती है
हड्डियां कांप जातीं हैं महाराज
साक्षात 'शीत' रहता है वहां !

यहां सब उससे डरते हैं
वह बरफ़ का आदमी
बरफ की छड़ी ठकठकाता
ठीक सकरांद के दिन
गांव से गुज़रते हुए
संगम में नहाता है
इक्कीस दिनों तक सोई रहती हैं नदियां
दुबक कर बरफ की रजाई में
थम जाता है चंद्रभागा का शोर
परिंदे तक कूच कर जाते हैं
रोहतांग के पार
तंदूर के इर्द गिर्द हुक्का गुडगुड़ाते बुजुर्ग
गुप चुप बच्चों को सुनाते हैं
'शीत' की आतंक कथा-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं सर
झूठ क्यों बोलना -
अपनी आंखों से नहीं देखा है उसे
पर सब कहते हैं
घर लौटते हुए कभी चिपक जाता है
मवेशियों की छाती पर
औरतें और बच्चे
भुर्ज की टहनियों से डंगरों को झाड़ते हैं --

'बरफ़ की डलियां तोड़ो
'डैहला' के हार पहो
शीत देवता
अपने 'ठार' जाओ
बेज़ुबानों को छोड़ो'

सच महाराज, आंखों से तो नहीं---
कहते हैं
ग़लती से जो कोई देख भी लेता है
वहीं बरफ़ हो जाता है
'अगनी' कसम !!

अब थोड़ा अलाव ताप लो सर,
इस से आगे कुछ नहीं है
देश के इस आख़िरी छोर पर
'शीत' तो है
और उससे डरना भी है
पर लड़ना भी है
यहां सब उससे लड़ते हैं जनाब
आप भी लड़ो

1999

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आग के इलाके में आओ!
(चंद्रकांत देवताले की कविताएं पढ़ने के बाद)

कब तक टालते रहोगे
एक दिन आना ही होगा तुम्हें
आग के इलाके में
जहां जल जाता है वह सब जो तुमने ओढ़ रखा है
जो नंगा हो जाने की जगह है
जहां से बच निकलने का कोई चोर दरवाज़ा नहीं है
तुम्हें आना चाहिए
स्वयं को परखें के लिए
बार-बार
आग के इस इलाके में

ज़रूरी नहीं
तपकर तुम्हें सोना ही होना है
सौंधी और ख़री
बेशक भुरभुरी
मिट्टी हो के लिए भी
जो हवा में उड़ जाती है

और हवा हो के लिए भी
जो भर सकती है तमाम सूनी जगहों को
जो पतला है पानी से भी
और पानी हो के लिए भी
ढोता हुआ अपना पूरा वज़न जो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहुंच सकता है आकाश तक

और आकाश हो के लिए भी
क्योंकि वही तो था आख़िर
जब कुछ भी नहीं था
फिर सब कुछ हुआ जहां
और उस प्रचुरता को
भरपूर भोग लेने को उद्धत आतुर जीव भी हुए
और जीवों में श्रेष्ठतम तुम हुए
आदमी
अपनी ही एक आग लिए हुए भीतर

बोलो
खो देना चाहते हो क्या वह आग ?

अगर नहीं
वह आग हो के लिए
फिर से तुम्हें आना चाहिए
बार-बार आना चाहिए
आग के इलाके में !

अगस्त 2007

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आग के इलाके का आदमी

वह आया था आग के आदिम इलाके से
आग तापता
आग ही ओढ़ता
और बताता सलीका
चीजों को देखने का
ख़ालिस आग की रौशनी में

वह जब करता था शक
उन तमाम चीज़ों पर
जो आग का तिलिस्म जगाती थीं
और उन बातों पर भी
जिनमें कि हम आग मानते आए हैं
तो ठीक करता था
क्योंकि आग को आग मानने
और उसे आग कह देने भर से
ख़त्म नहीं हो जाती बात
आग तो होना पड़ता है

उसकी यादों में तैरते हैं अनगिनत किस्से
छोटे-छोटे फ़ितरती देवताओं के
खंगालते थे जो तमाम खोखले ख़याल
साथ-साथ करते जा रहे निशानदेही
गफ्लतों, और फिसलनों वाली उन ख़ाली जगहों की
जहां फफूंद थे शातिर मनचली हवाओं के उगाए हुए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वहां ठसाठस अंगार भर देते

बीन-बीन चिनगियां जो पोसते थे
छिपा कर उम्रदराज़ पेड़ों की कोटरों में
कि चलनी ही है आंधी एक दिन
और दहक उठना है
उसके सपनों में उगा पूरा जंगल

दिखाता रहेगा खोलकर परत दर परत
अपने अंतस के व्रण
कि महज एक ओढ़ा हुआ विचार नहीं
सचमुच का अनुभव होती है आग
और क्या करती है उन चीज़ों के साथ
जिन्हें छू लेती है...

ढो रहा अपनी नंगी पीठ पर
आग के उपादान-उपस्कर
धधकते हाथों से छू कर
बनाता हमारे कांधों को पत्थर
उपभोग करता आग का
और उसी का वितरण
वह आता रहेगा
हर अंधेरे में
एक अभिशप्त मसीहा !

जुलाई 2007

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आर्कटिक वेधशाला में कार्यरत वैज्ञानिक मित्रों के कुछ नोट्स

सुबह होगी और दिन भर बसंत रहेगा

9.
पौ फट रही है
क्षितिज बैंगनी हो गया है
इस लंबी सर्दी के बाद जो सूरज उगेगा
कम से कम चार माह नहीं डूबेगा
मौत सी ठंडी इस सफेदी को
इंद्रधनुषी रंग बांटेगा
परिंदे और लोमड़ियां सफेद पोशाकें उतार
मनपसंद रंगों में धमा चौकड़ी मचाएंगे

10.
बर्फ़ पर कोई सिंदूर छिड़क गया है।

28.
सारा खेल वक़्त का है
वक्त सूरज तय करता है
सूरज हवाएं पैदा करता है
हवा समुद्र को छेड़ता है
समुद्र ने बर्फ़ को तोड़ना शुरू कर दिया है
बर्फ पिघलते ही काई के फीते तैरने लग जाएंगे ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

29.

यह हलचल ही है
जहां जीवन दिखता है
वह एक लहर थी
जो मछलियों को तट तक बहा लाई
और एक लहर ही होगी
जो उन्हें सही सलामत घर वापस ले जाएगी ।
दूर-दूर तक सूंध लेने वाले शिकारी
दूर-दूर तक सुन लेने वाले शिकार
गंधों और आहटों का द्वंद्व
इंद्रियों का तनावपूर्ण मुक़ाबला चलेगा
दूर-दूर तक यह जगह एक शिकारगाह बन जाएगी।

30.

चट्टानों पर कोंपले निकल आएंगी
तेज़ हवा की मार सहती हुई
धीरे-धीरे धरती के साथ भूरी होती लोमड़ी
झुंड से बिछड़े चूजों को खाना शुरू करेगी
चुराए गए अंडों से मांद भर लेगी
बहुत छोटा है उसके लिए
हारवेस्टिंग का यह मौसम/ फिर भी
आर्कटिक में भुखमरी नहीं है!

तुम्हारा नहीं हो...

25.

इस गुनगुनी धूपवाली सुबह
इस ठाठदार 'स्नो रिज़ार्ट' में
तुम्हारा नहीं होना भी
एक विलास है
रोयेंदार कम्बल की सलवटों डूबा हुआ
टटोलती रहती है जिसमें मेरी उंगलियां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन ख़ास चीज़ों को
रात भर साथ रहते हुए भी जो
सुबह अकसर नदारद होती है -
एक सुविधाजनक रिमोट बटन
एक सुकूनबख़्श सिग्रेट लाईटर
तुम्हारी यादों को दर्ज़ करने वाली
एक मुलायम पेंसिल
और जो पड़ी रहती हैं
सटी हुई आपस में
फिर भी अलग-अलग
छिटके हुए गुमशुदा लगभग
कहां हो तुम।

31.
आज मैं उन तमाम चीज़ों के सैम्पल लूंगा
दिन निकलते ही जो
बरफ़ के क्रिस्टलों के बीच
बढ़ते दबाव और दुख की उम्र बताना शुरू कर देती हैं।

एक क्लोरोफ़िल की जिजीविषा में छिपी
मिट्टी के टुकड़ों की खोई हुई महक जांचूंगा
और यह पता लगों की कोशिश करूंगा
कि क्या तुम्हारे नहीं हो से ही
शुरू कर दिया था एक दिन
घुलना
उस भरी-पूरी हरियाली ने
लहरों ने, हवा ने
और मिट्टी ने
खो जाना
पानी में
और ठोस हो जाना?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

32.
दोपहर तक
तुम्हारा नहीं होना
आर्द्रता के नहीं होने में तब्दील हो गया है
कि द्रवित और गतिशील अंतःकरण के बावजूद
यहां हर मौसम का है एक घनीभूत सनस्तर
रूखा, कड़ा, ठहरा हुआ
एक मरियल सूरज जिसके क्षितिज में
अपनी पूरी ताक़त से चमका है दिन भर
और शेष हो गया है
बिना किसी को पिघलाए
बेहूदा कोहरे की संपीड़ित परतों में।

33.
सांझ ढलने पर तुम्हारा नहीं होना
एक अलग ही भाव से शुक्र तारे का झिपझिपाना है
मेरे एकांत को चिढ़ाते हुए
पृथ्वी के अंतिम छोर पर
इस विराट टेलीस्कोप के अतिरिक्त
तुम्हें नाप लेने के और भी उपकरण हैं मेरे पास
एक से एक शक्तिशाली
छूट ही जाती है फिर भी
कोई एक अपरिहार्य रीडिंग
व्यर्थ हो जाता है दिन भर जुटाए गए आंकड़ों का परिश्रम
गड़बड़ा जाता है सारा समीकरण
रोशनदान के बाहर तैरती हुई
अंधेरी हवाओं के सुपुर्द कर आता हूं चुपचाप
अपने संभावित आविष्कार की हज़ारों चिंदियां।

36.
'फुली लोडेड' हो कर भी, कभी
शामिल हो जाती है जीवन में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसी अवशता
और आकर अगल-बगल बैठ जाते हैं
अनिश्चय और अभाव
मेरी देह से लिपट-लिपट जाती इस कातर नीरवता में
दूर दूर तक स्थूल स्पर्श का आभास न होना
तुम्हारा नहीं होना
दरअसल
तमाम छूटी हुई गणनाओं से पहले
तुम्हें खोज पाना है अपने भीतर
अपने ही भीतर
आह
तुम!

एक शाश्वत नृत्य इसी बासी पृथ्वी पर

49.
क्या तम्हें पता था
झूमते रहते हैं देर रात तक
खूबसूरत "नार्दन लाईट्स"
मटमैले ध्रुवीय आसमान पर
चलता रहता है-उत्सव
शून्य से तीस डिग्री नीचे भी?

इतनी सुंदर है प्रकृति
और फैली हुई
क्षण-क्षण अनगिनत रूपाकारों में
और भी फैलती हुई
अद्भुत है यह सब
बड़ा ही दुर्लभ
बाहर निकल कर देखा है कभी?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

50.
खोज पाता होगा सदियों में कोई एक
इस गुप्त उत्सव का रहस्य
जो चल रहा है लगातार
जो सुन नहीं पाते हम अपने ही शोर में
जो देख नहीं पाते हम अपने ही सपनों के कारण
आह!
क्या अनुभव है
जागते हुए
खुले में
सन्नाटे में यह सब देख जाना।

55.
इस तरह से सिकुड़े हुए थे हम
कितने दयनीय
परत दर परत
बरफ़ की तरह
अपने दबावों में दबे हुए
बिछुड़े हुए
अपने-अपने गहरे खंदकों की
अंधेरी भूल भूलैया में
दुबके, अकड़े हुए
जहां नरक है, नीचे
वहीं से नापनी थी हम सब को
नए नक्षत्रों की दूरियां
खोजनी थी नई दुनिया

58.
अरे, कौन रुका रहना चाहता था ?
कौन?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

63.

धूप सी बरसती थी
संतप्त हहराती आकांक्षा
भाप सा उड़ जाता था
इस महान पृथ्वी का तरल सौंदर्य
कि कूच कर जाना था ऐसे ही एक दिन
मुझे
तुम्हें
हम सब को
सहस्त्रों आकाशगंगाओं की तलाश में
इस वेधशाला से तेरह अरब प्रकाशवर्ष दूर
जैसे ही अवसर मिलें

64.

कौन रुका रहना चाहता था
इस बासी पृथ्वी पर?

75.

लेकिन रुको दोस्त
अपनी युटोपिया पर तुम्हारा पूरा पूरा हक़ है
लेकिन एक छोटी सी छूट लेना चाहता हूं मैं
माफ करना, यहां खलल डालते हुए
क्या तुम अपने अत्याधुनिक 'डिवाईस' से
इस बीहड़ आर्कटिक के काले आसमान पर
प्रक्षेपित कर सकते हो मुझे?
उन सुंदर ध्रुवीय प्रकाशों की पृष्ठभूमि पर
बार-बार उभारना चाहता हूं
अपनी प्रतिछाया
बादल पर
बिजली और इंद्रधनुषों की तरह
नाचना चाहता हूं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

76.

ओ वेगवान तूफ़ान
ओ स्थिर जलमग्न हिमखंड!
ओ उफनते समुद्र
ओ ख़ामोश सितारो!

ओ
मेरे प्रिय साज़िंदो !!
आज की रात तुम ख़ूब बजाना
दिल से
कि रूपांतरित हो जाना है हम सब को
नाचते हुए
एक तरोताज़ा स्वर्ग में
इसी बासी पृथ्वी पर।

1995-2006

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूछो सूरज से क्या वह आएगा?

ठिठुरते मौसम की धार
छील छील ले जाती है त्वचाएं
बींधती हुई पेशियां
गड़ जाती हड्डियों में
छू लेती मज्जा को
स्नायुओं से गुजरती हई
झनझना दे रही तुम्हें आत्मा तक...

सूरज से पूछो, कहां छिपा बैठा है?

बर्फ़ हो रही संवेदनाएं
अकड़ रहे शब्द
कंपकपाते भाव
नदियां चुप और पहाड़ हैं स्थिर !
कूदो
अंधेरे कुहासों में
खींच लाओ बाहर
गरमाहट का वह लाल-लाल गोला

पूछो उससे, क्यों छोड़ दिया चमकना?

जम रही हैं सारी ऋचाएं
जो उसके सम्मान में रची गई
तुम्हारी छाती में
कि टपकेंगी आंखों से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब पिघलेगी
जब हालात बनेंगे पिघलने के

कहो उससे, तेरी छाती में उतर आए!

छाती में उतर आए
कि लिख सको एक दहकती हुई चीख
कि चटकने लगे सन्नाटों के बर्फ़
टूट जाए कड़ाके की नींद
जाग जाए लिहाफ़ों में सिकुड़ते सपने
और मौसम ठिठुरना छोड़
तुम्हारे आस पास बहने लगे
कल-कल
गुनगुना पानी बनकर

पूछो उससे क्या वह आएगा?

1985

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आस-पास एक पृथ्वी चाहिए

टिमटिमा-टिमटिमा कर
वह पृथ्वी को नज़र आना चाहता था
ज़्यादा से ज़्यादा देर तक
उसकी नज़रों में बस जाना चाहता था
उसकी सोच पर हावी हो जाना चाहता था
वह सूरज से 'जलता' था
कि क्यों सूरज की तरह वह पृथ्वी के पास नहीं है
जब कि देखा जाए तो
वह भी एक जलता हुआ सूरज ही है
कि क्यों उसका जलना
महज टिमटिमाना है पृथ्वी के लिए
जबकि सूरज का जलना, चमकना।
और क्यों रहती है पृथ्वी बुझी-बुझी
जब ग्रहण लग जाता है सूरज को
मानो मातम मनाती हो।
वह पृथ्वी को यूं हसरत से कतई नहीं देखता
पर क्या करता
कि स्वयं को 'सूरज' महसूसने के लिए
उसे भी अपने आस-पास एक पृथ्वी चाहिए ...

पृथ्वी से बहुत दूर
एक सितारा
कुछ इस तरह टिमटिमाता रहता था।

केलंग, फरवरी 22, 2007

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक नदी जिसे हम पीना चाहते हैं

हमें चाहिए
एक नदी
उस में कूद जाने लिए

एक नदी
उस में तैरने के लिए

एक नदी
उस में डूब जाने लिए !

एक नदी हम सोचें
अपने आकाश
और उस की सूखती हवा के लिए

एक नदी हम खोजें
अपनी धरती
और उस की तपती मिट्टी के लिए

एक नदी हम पोसें
अपनी ज़िंदगी
और उस में ग़ायब हरियाली के लिए

हमें चाहिए
एक नदी
एक मुश्त
अभी
इस चिलचिलाते समय में

कि पीते रहें उसे किस्तों में
ता उम्र
आहिस्ता, आहिस्ता !

जुलाई 4, 2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम चूक गए कितनी ही नदियां

एक नदी हमारे भीतर रहती है
जिस की कोई आवाज़ नहीं
हमारे अंतःकरण को धो डालती है
बिना हमें बताए

एक नदी आस-पास बहती है
जिस की कोई शक़्ल नहीं
बेरंग
खिलखिलाती
बिना दाख़िल हुए हमारी नींद में
संभव कर देती हमारे सपने

एक नदी यहां से शुरू होती
जिस की कोई गहराई नहीं
बेखटके उतर जाते हम
बिना उसे छुए
जब कभी

कुछ नदियां पहाड़ लांघती
पठार फांदती यहां तक आतीं
चुपके से डूब जातीं हम में
और हमें पता भी न चलता---
कितनी ही नदियां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कितनी-कितनी बार हमसे
कितनी-कितनी तरह से जुड़तीं रहीं
और हमारा अथाह खारापन
चूक गया हर बार
उन सब की ताज़गी

हर बार चूक गए हम
एक मुकम्मल नदी !

25-07-2008

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बरफ़

वह आता
जैसे तितलियां

विराजता
जैसे सम्राट

और खिसक जाता
जैसे चोर !

1988

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम

1

आंखें आशंकित थीं
हाथों ने कर दिखाया

2

आज प्रार्थना नहीं सुनी जाएगी
ईश्वर व्यस्त है
तुम भी काम पर लग जाओ
कल वह ज़रूर सुनेगा

3

काम की जगह पर
सब कचरा बिखरा
बस काम चमक रहा
आग सा !

2006

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नई धार लिए काम पर लौटना

दोस्तो हम यहां इसलिए आए हैं
कि काम की जगहों पर
रोज़मर्रा की झंझटों में
चुक जाते हैं हम
छीजें लगती है चीख
बुझें लगती है आग
भोथरा जाती है सोच

भूल जाते हैं हम
कि कोई रोता था
हमसे सहा न गया था
और खड़े हो गए थे उस के पक्ष में
कि काम की जगहों पर
याद नहीं रह पाता
कि हमें खड़े ही रहना था

दोस्तो हमें यहां आते रहना चाहिए
इस या उस बहों

और करते रहना चाहिए
एक दूसरे को रिचार्ज
कि कितना अच्छा लगता है
नई चीख
नई आग
और नई धार लिए काम पर लौटना

जंवरी, 2005

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम की जगहों पर कुछ हादसे

टीन कूटते लड़के

दुबली लड़की की चौखट के सामने जो वर्कशाप है
वहां 'लाईं' पर उकड़ूं बैठे रहते हैं
कुछ मुस्कराते चेहरे।

उनके चौड़े कंधों पर उगी रहती हैं बलिष्ठ भुजाएं
जिनमें से बढ़कर आगे निकला हुआ उत्साह
हर सुबह मज़बूत हाथों से
कूटता है टीन
टीन- टीन- टीन ---
बजती रहती है उसी लय में
विविध भारती

हो सकता है कुछ गा रहे हो वे होंठ
हो सकता है उस दुबली लड़की के लिए
हो सकता है दूर गांव में अपनी प्रेमिकाओं के लिए
ऐसे समय में जबकि दूभर होता जा रहा है सुनना
कोशिश करता हूं कान लगा कर समझें की
अगरबत्तियों की खुशबुओं
और मंदिर जैसे भोर के बाज़ार को

दुबली लड़कियां

टीन कूटते लड़के के सामने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो दर्ज़ियों का
एक चोर दरवाज़ा है छोटा सा
आंखें मलती
रंग-बिरंगी सलवटें झाड़ती
झुक-झुक कर एक के बाद एक
निकल रही हैं वहां से
दुबली-दुबली उंगलियां
पतली-पतली अंजुरियां
छलकती ताजा किरणों के
सामूहिक अर्घ्य से तर होती हैं हर सुबह
गलियों में बिछी इर्नट।

टीन कूटता लड़का
देख लेना चाहता है नज़र भर उनकी कनबतियां
और पकड़ लेना फिसलती निगाहों में
जबकि छिटकता जाता है दुबली लड़कियों का
गुच्छा
अलग-अलग फुसफुसाहटों में
अगले ही पल एक कतार
समा रही है
चोर दरवाज़े के भीतर

बकरियां, मुर्गियां

भीतर की नीम अंधेरी
सीलन भरी घरघराहटों में
जुती रहेगी दुबली लड़कियों की चेतना
मशीनों पर झुकी रहेंगी गर्दनें दिन भर
देर रात तक
प्रत्यर्पित
जैसे कसाई के ठीहे पर
बकरियां और मुर्गियां...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुत्ते

ग़ायब हो जाएंगी मुस्कुराहटें शाम तक
गर्द पड़ जाएगी चौखटों पर
धूल और घाम में चिड़चिड़ा जाएगा
आगे बढ़े हुए हाथों का उत्साह
दुर्गंध उठ रही होगी
सड़ रहे गोश्त से
वध स्थल पर
मंडरों लगेंगे कौए
पहुंच जाएंगे सूंघते हुए
बड़े-बड़े पीले दांतों वाले कुत्ते।

1998

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भीतर उगा हुआ आदमी

वह मुझ से बड़ा नहीं होना चाहता

मेरे अनुभवों और प्रभावों के दायरे से
बाहर निकलने की तो सोच भी नहीं सकता

मुझ में ही, मेरे साथ
एक होकर रहना चाहता है

लेकिन मुझे देखना है उसे अपने से इतर
हर हाल में
हाथ बढ़ा कर करनी है दोस्ती
और मुक्त कर देना है उसे
तमाम दूसरे मित्रों की तरह ...

कि जाओ दोस्त,
तुम भी हवाओं को चूमो
पेड़ों सा झूमो
चहक उठो पक्षियों की तरह
बादलों सा बरसो
छा जाओ बरफ़ की तरह पर्वतों और पठारों पर
बस यही एक जीवन है
यही एक दुनिया

भीतर उगा हुआ आदमी ख़ामोश रहता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं बौखलाता हूं

फिर पसीज कर
कांपता हूं फिर
हो जाता हूं थिर

प्रतीक्षारत
कि वह आदमी

पेड़
पक्षी
बादल
या बरफ बन जाए !

1989

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तलब

तुम्हारी याद झपाक से आती है।
जब काम निपटा कर
मेज पर से सिर उठा कर
लम्बी जम्हाई लेता हूं
तब...
मानों चाय की तलब

तुम ठीक़ से तो हो न ?

क्या फ़र्क पड़ जाएगा
तुम्हारे ठीक न होने से भी
फाइलें तो पिटती रहेंगी
घंटियां बजती रहेंगी
चाय आती रहेगी--
तुम भी क्यों नहीं आ जाती
किसी एक कप के साथ ?

तुम ठीक से तो हो ?

2003

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिमला - कुछ स्मृति स्थल

शिव बावड़ी

उन दिनों मैंने तूम्हें घूंट-घूंट पिया
दारू की तरह
और तुम्हारा दिया अल्सर
आज भी सुलग रहा है
मेरे जिस्म के भीतर।

फेयर लेन

घास तो वही है।
काश, इस मखमल पर कुछ लड़के फ्रिस्बी
खेलते
कुछ अपने कमरों में नोट्स रट रहे होते
ठाकुर की स्टाल से 'बन-आमलेट' की खुशबू
उठ रही होती
देर रात कुछ जोडे 'कंट्री रोड्स' गाते जंगल में
उतर गए होते
चांदनी में 'वुडरीना' के आस पास रोमांस हो
रहा होता
कोई हुड़दंगी नाटी लगाए होते
कुछ पढ़ाकुओं ने आकर आपत्ति कर दी होती
और एक लड़का इस सबसे बेख़बर
चार्वाक, लाओत्से और मार्क्स को समझने की
कोशिश करता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूर 'क्रेग्नेनो' में बीयर पीते, सूर्यास्त देख रहा होता !

घास तो वही है
दरख़्त और इमारतें भी कमोवेश
हवा लेकिन कुछ बदली-बदली सी है।

समर हिल

दरअसल तुझे भूल जाना चाहता था
एक दुःस्वप्न की तरह
खास कर के दो कूबड़ों वाले ऊंट की पीठ जैसे
तेरे इस चौराहे को
जो मुझे उलझन में डालता था

जहां आकर मेरा मस्तिष्क शून्य हो जाता
एक आतंक मुझ पर हावी होता
कांपता हुआ मैं गहरी खाई में डूबता जाता
नीचे-ही नीचे ---

जहां तितलियों के सपने में आते हैं
काले अंधेरे जंगल
जिनमें जाल बिछे हुए कदम-कदम पर

जहां सूरज छिपा रहता था दयार की पत्तियों में
चांद से झरता था पूरा एक समुद्र
और नाचते रहते हज़ारों डाल्फिन अपनी ही धुन पर

जहां कोई नदी नहीं थी
केवल एक ढलान थी अंत तक उतर गई

जहां परिंदों को
अलग-अलग दिशाओं में उड़ें की छूट थी
कोई खतरा नहीं भटकें का फिर भी
जहां भयभीत रहते थे दरख़्त
और सड़कें सहमी हुईं दबी-दबी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहां कुछ तो था
जो अव्वल तो होना ही नहीं चाहिए था
होना ही था अगर
तो किसी और तरह से होना चाहिए था

जहां से मुझे एकदम भाग खड़े होना चाहिए था
फिर भी जाने क्यों
जहां मैं रुका रह गया था !

इस चौराहे पर आकर
तय नहीं कर पाता था अक्सर
कि किस ओर जाना था मुझे --!

आज भी बसें आ रही हैं
मुड़ रही हैं
लोग उतर रहे हैं, चढ़ रहे हैं
बसें रवाना हो रही हैं ---

मैं डाकघर की पौड़ियों पर
इस उन्मत्त परिवेश की चकाचौंध से
नज़रें चुराता
आज भी कोई निर्णय नहीं ले पाया हूं
जानता हूं
अंत में चल देना होगा मुझे
हमेशा की तरह बालूगंज ठेके की तरफ
भारी सिर लिए पैदल ही

उच्च अध्ययन संस्थान

मेरी ओर पीठ किए रहे तुम हमेशा
और मुझे दिखता रहा तुम्हारे पिछवाड़े में
वह सब
जिसे मैंने कभी खोजना ही नहीं चाहा -

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ताम्रपत्र पर टांका गया
अंग्रेज़ी भारत का वह अंतिम मानचित्र, जंतर-मंतर
बड़े-बड़े गढ़े हुए, भारी, बेलौस, चिकने सामंती पत्थर
और ज़मीन में धंसा हुआ
गांधी का यातनागृह
जिस की छत पर घास उगी हुई
जिसके संकरे रोशनदान से
एक बार चिंघाड़ा था मैं
एक हूकू बंदर की तरह
उद्विग्न होकर मुक्तिबोध जैसे -

'पिता, ओ पिता !'

और जहां से छूट भागा था
उस पुकार से विचलित
भयभीत पक्षियों की तरह
एक अध्ययनरत जोड़ा
नीली स्कर्ट ठीक करती एक बेपरवाह लड़की
हाथों में 'योजना' पत्रिका की नलकी बनाए हुए
एक दढ़ियल अधेड़---

मुझे घिन हो आई थी अपने समेत उन सभी लंगूरों से
चिंघाड़ते सीटियां बजाते जो
किले की दीवारों को लांघ आई पुरानी शाखों से झूलते
उस जोड़े को एक जलूस के आगे
तकरीबन हांकते हुए से ले जाते थे
कुछ पा लेने के से दंभ में

2002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिमला का तापमान

(सामान्य से दस डिग्री ऊपर)

+1°C

भीड़ कभी छितराती है
कभी इकट्ठी हो जाती है
तिकौने मैदान पर विभिन्न रंगों के चित्र उभरते हैं
एक दूसरे में घुलते हैं
स्पष्ट होते हैं
बिख़र कर बदल जाते हैं
कभी नीली जींस की नदी सी एक
दूर नगर निगम के दफ्तर तक चली जाती है
पतली और पतली होती
जल पक्षियों से, डूबते, उतराते हैं
उस पर रंग बिरंगी टी-शर्ट्स और टोपियां
धूप सीधी सर पर है एकदम कड़क
और तापमान बढ़ा हुआ ।

+2°C

बच्चे बड़े-बड़े गुब्बारे ओढ़ रहे हैं
गोल लम्बूतरे ।
बड़ी-बड़ी गुलाबी कैंडीज में से झांकता
एक मरियल काला बच्चा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे पास आकर रोता है -
'अंकल ले लो न, कोई भी नहीं ले रहा'
उसकी आंखें प्रोफेशनल हैं ।
फिर भी भीतर कुछ कांप सा जाता है ।
तापमान पहले से बढ़ गया है ।

$+3^0C$

प्लास्टिक का हेलीकॉप्टर
रह रह कर मेरे पास तक उड़ा चला आता है
लौट कर लड़खड़ाता लैंड करता है
रेलिंग पर बैठा बड़ा सा बंदर
दो लड़कियों की चुन्नी पकड़ता, मुंह बनाता, डराता है ।

लड़कियां
एक सुंदर, गोरी, लाल-लाल गालों वाली
दूसरी साधारण, सांवली
प्रतिवाद नहीं करतीं
शर्म से केवल मुह छिपातीं, मुस्करातीं हैं ।
तापमान बढ़ता ही जा रहा है

$+4^0C$

इक्के दुक्के घोड़े वाले ठक-ठक किनारे किनारे दौड़ रहे हैं
घोड़े वालों की चप्पलों की चट-चट
घोड़े की टापों में घुल मिल रही है
दोनों हांफ रहें हैं
ग़र्म हवा की किरचियां हैं
धूप की झमक है ।
दोनों की चुंधियाई आंखों में आंसू हैं ।
गाढ़े सनग्लास पहने सैलानी स्वर्ग में उड़ रहा है ।
बड़े से छतनार दरख़्त के नीचे
आई जी एम सी में इलाज करवाने आए देहाती मरीज सुस्ता रहे हैं ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेकार पड़े घोड़े भी निश्चिंत, पसरे हैं ।
लेकिन घोड़े वाले परेशान, दाढ़ी खुजला रहे हैं ।
ग्राहक की प्रतीक्षा में उन की आंखे सूख गई हैं
एकदम सुर्ख़ और ख़ाली ।
एक लकीर भर डोल रही है उनमें ।
यह लकीर घोड़े और घोड़े वाले में फर्क़ बताती है ।
तापमान कुछ और बढ़ गया है ।

$+5^0C$

उस बड़े बंदर को दो युवक
(एक चंट, दूसरा साधारण ढीला-ढाला सा)
चॅाकलेट खिला रहे हैं
वह बंदर उनके साथ गुस्ताख़ी नहीं करता
वे लोग बातें कर रहे हैं खुसर-फुसर
युवक 'पंजाबी' में
बंदर 'बंदारी' में
क्या फ़र्क़ पड़ता है
'दोस्ती' की एक ही भाषा होती है
उनकी आपस में पट रही है, जोड़-तोड़ चल रहा है
तापमान तेज़ी से बढ़ रहा है ।

$+6^0C$

हिजड़े और बहरूपिए मचक-मचक कर चल रहे हैं ।
उन के ढोली गले में रूमाल बांधे
अदब से, झुक कर उन के पीछे जा रहे हैं ।
पान चबाते होंठों में लम्बी-लम्बी विदेशी सिग्रेटें दबाए
गाढ़े मेकअप व मंहगे इत्र से सराबोर
इन भांडों से बेहतर ज़िंदगी और किसकी है ?
लंगड़ी बदसूरत भिखारिन भीख न दें वालों को गालियां देती है।
उसके अनेक पेट हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और हर पेट में एक भूखा बच्चा ।
संभ्रांत सा दिखने वाला एक अधेड़
काला लबादा ओढ़, तेल की कटोरी हाथ में लिए
फ्रेंडशिप बैंड वाली तिब्बती लड़की के बगल में बैठ गया है
उस की बूढ़ी माँ को फेफड़ों का कैंसर है ।

गेयटी के सामने से एक महिला गुज़र गई है
उसके सफ़ेद हो रहे बाल मर्दाना ढंग से कटे हैं
कानों में बड़ी-बड़ी बालियां और गले में खूब चमकदार मनके
उसकी नजरें एक निश्चित ऊंचाई पर स्थिर हैं
उसकी बिंदास चाल में
समूचे परिदृश्य को यथावत् छोड कहीं पहुंच जाने की आतुरता है
तापमान काफी बढ़ गया है।

+6^{0}C

हनीमून जोड़े फोटो खिंचवाते हैं
कभी-कभी किसी-किसी का कैमरा
क्लिक नहीं करता
चाहे कितना भी उलट-पलट कर देखो
कभी-कभी कुछ जोड़े
बिल्कुल क्लिक नहीं करते
फिर भी वे साथ-साथ चलते हैं
लिफ्ट में, बारिश्ता, बालजीज़ में
जाखू से उतरते हैं एक दूसरे से चिमट कर
स्कैंडल पर गलबहियां डाले
और रिज पर एक ही घोड़े पर
ठुम्मक-ठुम्मक
घोड़े की छिली पीठ की परवाह किए बिना ...
तापमान एकदम बढ़ गया है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

+7° C

गुस्ताख़ बंदर रेलिंग पर से गायब है
लड़कियों के पास पंजाबी युवक पहुंच गए हैं
चंट युवक सुंदर वाली से सटकर बैठ गया है
उसे यहां वहां छू रहा है
लड़की शर्म से पिघल रही है
आंखें नीची किए हंसती जा रही है
उसके ओठ सिमट नहीं पा रहे हैं
दंत पंक्तियां छिपाए नहीं छिप रही हैं ।

सांवली लड़की कभी कलाई की घड़ी देखती है
कभी चर्च की टूटी हुई घड़ी की सूईयों को
जो लटक कर साढ़े छह बजा रही हैं
साधारण युवक की आंखें मशोबरा के पार
कोहरे में छिप गई सफेद चोटियों में कुछ तलाश रहीं हैं
वह बेचैन है मानो अभी कविता सुना देगा
तापमान बेहद बढ़ चुका है

+8° C

कुछ पुलिस वाले
नियम तोड़ रहे एक घोड़े वाले को
बेंतों से ताड़-ताड़ पीटने लगे हैं
घोड़े वाले की पीठ पर लाल-नीले निशान पड़ गए हैं
गुस्सा पीए हुए उसके साथी उसे पिटते हुए देखते रह गए हैं
पुलिस वाले उसे घसीटते हुए ले जा रहे हैं
वह जिबह किए जा रहे सूअर की तरह गों-गों चिल्ला रहा है
गांधी जी की सुनहरी पीठ शांतिपूर्वक चमक रही है
इंदिरा धूप और गुस्सा खा कर कलिया गई हैं
परमार चिनार के पत्तों में छिपे झेंप रहे हैं
तापमान भीतर से बढ़ने लगा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

+10° C

मेरे बगल में स्टेट लाइब्रेरी खामोश खड़ी है
साफ़ सुथरी, मेरी सफ़ेद कालर जैसी
मेरी मनपसंद जगह !
वहां भीतर ठंडक होगी क्या ?
तापमान बर्दाश्त से बाहर हो गया है

11.05.2002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चींटियां

कतार

कतार में सरपट दौड़ती चींटियां व्यस्त हैं
इधर से उधर
उधर से इधर
लगातार मेहनत करती, ख़ुशहाल कल के लिए ।

इतनी भी फुरसत नहीं
कि हाल पूछ लें, कम से कम
राह में मिलने वाले दोस्त, रिश्तेदार का
बस 'हलो' कह कर आगे बढ़ जाती हैं
कहीं चूक न जाएं कोई छोटा सा अवसर
भाग्योदय का ।

कतार में सरपट दौडती चींटियां ख़बरदार हैं
कि कभी भी कोई बड़ा सा पैर
धम्म से पड़ सकता है अचानक उन पर
क्षण भर में टूट सकती है - कतार
गड्ड-मड्ड हो सकते हैं - बेहतर कल के सपने
ढोनी पड़ सकती हैं - अपने संबंधियों की लाशें
सभी व्यस्त चींटियों को
इधर से उधर,
उधर से इधर ।

कतार में सरपट दौड़ती चींटियां आश्वस्त हैं
कि धीरे-धीरे पुनर्व्यवस्थित हो जाती है कतार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर से स्पष्ट होने लगते हैं सपने
फिर से व्यस्त होने लगती हैं चींटियां
सब कुछ भूल कर
इधर से उधर
उधर से इधर।
क़तार में सरपट दौड़ती चींटियां
कभी-कभी बहुत सुंदर दिखती हैं ।

जहां कुछ मीठा गिर कर छूट गया हो

घर के किसी न किसी कोने पर
(जहां भी कुछ मीठा गिर गया हो)
जाने कहां से आ कर
इकट्ठी हो जाती हैं ढेर सारी चींटियां
चाहे किसी भी शहर में निकल जाओ ।

तुम पंखा चलाते हो
बाल्टियां उंडेलते हो
हल्दियां बुरकते हो
झाड़ू मारते हो -
'दफ़ा हो जाओ नन्हें बदमाशो
चैन से जीने दो मुझे।'
थोड़ी ही देर में बंध जाती है फिर एक कतार।

तुम पीछा करते हो
चिप्स बिछी फ़र्श के किनारे-किनारे
डिस्टेम्पर पुती दीवारों के साथ-साथ
टीक के दरवाज़ों की झिर्रियों में से बाहर निकलती
मार्बल की सीढ़ियों पर, राहदरी में
गैराज के शटर के साथ-साथ
लोहे के जंगलों के पार, कोलतार की सड़कों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और धूल भरी पगडंडियों से होते हुए
जाने कहां तक चली गई है कतार !

निश्चय ही गांव तक ।

लाख झटकने
झाड़ने और
पोंछने के बावजूद
कैसे चिपका रह जाता है तुम्हारे संस्कारों से
शहद की बूंद सा
एक गांव ।

जाखू, मई 2002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निरामिष

(संकटग्रस्त प्रजातियों के लिए)

बहुत कम रह गए हैं हम
बस गिनती के -
खरगोश, हिरनौटे, मेमने ...
आओ,
हम इस गुफा में मिल-जुलकर रहें ।

नाराज वक्त ने
छोड़ दिए हैं हमारे पीछे
बग्घे और बिलाव
इस अंधेरे में
हम धीरज से अपनी संवेदनाएं पोसें चुपचाप।

व्यर्थ है दहाड़ने की कोशिश
बेमानी है विरोध
बजाए नख-पंजों की मांग रखने के
आओ
अपने उपलब्ध खुरों से
संवारें मुलायम रोयें
मेहनत करें घास जुटाएं
जिंदा रहने के लिए
और देखना एक दिन
खूब रोशनी होगी ...
और हरियाली ही हरियाली
केवल हमारे लिए।

1987

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अति जीवन

(जंगल में जिंदा रहने के अभिलाषियों के लिए)

घात लगा-लगा कर तुम उसकी ताकत जांचते रहना
पूरी तसल्ली के बाद ही झपटना उस पर
उसे दबोचने के बाद फिर शुरू हो जाना
एक मुलायम सिरे से-
भीतर तक गड़ा देना तुम अपने तीखे दांत
भींच लेना पूरी ताक़त से जबड़े
चूस लेना सारा का सारा लहू
रसायन
रंग और रफ़्तार
जिनसे बनता है जीवन ।

मत सोचना भूल कर भी
कि उसका दूसरा सिरा
जो पहुंच नहीं सकता तुम तक
तुम पर लानतें भेजता होगा।

परवाह ही नहीं करनी है
उन लानतों और प्रहारों की
जो तुम तक नहीं पहुंच सकती।

तुम अपने पैने पंजों में जकड़ लेना उसका धक-धक हृदय
जरा भी ममता न ले आना मन में
निचोड़ कर सारी ऊर्जा-
पेशियों, वसा और मज्जा की
चाट डालना एकाग्रचित्त हो, धीरज धर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चबा चबा कर
खींच लेना पूरी ताक़त के साथ
उसका सम्पूर्ण प्राणतत्त्व अपने भीतर
विचलित हुए बिना...
क्षण भर भी।

लेकिन रहना सतर्क
कान रखना खुले और नासापुट भी
कहीं कोई अनजानी आहट
कोई अजनबी झौंका
या तुम्हारा सजातीय ही कोई
झपट कर छीन न ले जाए तुम्हारा यह शिकार।

बस यही एक नियम है
जिंदा रहने का
इस जंगल में।

1986

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बुद्ध न हो पाना

मैंने जंगल को देखा
एक लकड़बग्घे की तरह
और झटपट मेरे सपनों में जुटने लगा एक
झुंड।

मैंने प्यार किया
और परिवार बनाया
कि जीना असंगत न लगे।

फिर पता नहीं
मेरी अपनी ही भूख थी वो
या कि शावकों की कोई गुप्त पुकार...
मैं उठा, बेताब
कूदता रहा झुके हुए पुट्ठों पर
पूरा एक झुंड नहीं बन गया जब तक
दुर्गंध में नहाया
दौड़ता-भागता
एक दुर्बल हिरन को सूंघता हुआ।

'सभी को कुछ न कुछ चाहिए
जीने के लिए'
मैंने समझाया खुद को -
जैसे इस हिरन को घास
और मुझे मांस।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देखता रहा, चुपचाप
ठीक एक लकड़बग्घे की तरह
बेबस,
अपना 'बुद्ध' न हो पाना।

केलंग, 30-06- 2007

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहाड़
(चित्रकार सुखदास की पेंटिंग्ज़ देखते हुए)

अकड़

रंग बरंगे पहाड़
रूह न रागस
ढोर न डंगर
न बदन पे जंगल
अलफ नंगे पहाड़ !
सांय सांय करती ठंड में
देखो तो कैसे
ठुक से खड़े हैं
ढीठ
बिसरे पहाड़ !

चुप्पी

काश ये पहाड़
बोलते होते
तो बोलते
काश
हम बोलते होते

सुरंग

पर जरा सोचो गुरुज़ी
जब निकल आएगी
इस की छाती में एक छेद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
और घुस आएंगे इस स्वर्ग में
मच्छर
सांप
बंदर
टूरिस्ट
और जहरीली हवा
और शहर की गंदी नीयत
और घटिया सोच, गुरुजी
तब भी तुम इन्हे ऐसे ही बनाओगे
अकड़ू
और ख़ामोश

1996

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहाड़ी खानाबदोशों का गीत

अलविदा ओ पतझड़ !
बांध लिया है डेरा-डफेरा
हांक दिया है अपना रेवड़
पथरीली फाटों पर हमें
यह तुम्हारी आखिरी ठंडी रात है
इसे जल्दी से बीत जाने दे
आज हम पहाड़ लांघेंगे
उस पार की दुनिया देखेंगे !

विदा, ओ ख़ामोश बूढ़े सराय !
तेरी केतलियां भरी हुई हैं
लबालब हमारे गीतों से
भरी हुई है हमारी जेबों में
ठसाठस तेरी कविताएं
मिलकर समेट लें
भोर होने से पहले
अंधेरी रातों की तमाम यादें
आज हम पहाड़ लांघेंगे
उस पार की हलचल सुनेंगे !

विदा ओ गबरू जवान कारिंदो !
हमारी पिट्टूओं में
ठूंस दिए हैं तुमने
अपनी संवेदनाओं के गीले रूमाल
सुलगा दिया है तुमने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारी छातियों में
अपनी अंगीठियों का दहकता जूनुन
उमड़ें लगा है एक लाल बादल
आकाश के उस कोने में

आज हम पहाड़ लांघेंगे
उस पार की हवाएं सूंघेंगे !

सोई रहो बरफ में
ओ कमज़ोर दियों
बीते मौसम घूंट घूंट पिया है
तुम्हें बदले में
कुछ भी नहीं दिया है
तैरती है हमारी देहों में
तुम्हारी ही नमी
तुम्हारी ही लहरें मचलती हैं
हमारे पांवों में
सूरज उतर आया है आधी ढलान तक
आज हम पहाड़ लांघेंगे
उस पार की धूप तापेंगे !

विदा ओ अच्छी ब्यूंस की टहनियों
लहलहाते स्वप्न हैं
हमारी आंखों में
तुम्हारी हरियाली के
मजबूत लाठियां हैं
हमारे हाथों में
तुम्हारे भरोसे की
तुम अपनी झरती पत्तियों के आंचल में
सहेज लेना चुपके से
थोड़ी सी मिट्टी और कुछ नायाब बीज

अगले बसंत में हम फिर लौटेंगे !

कारगा, 20-11-2009

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहाड़ के पीछे छिपा होगा इसका इतिहास

(रोहतांग पर शोधार्थियों के साथ पद यात्रा करते हुए)

मुझ से क्या पूछते हो
इस दर्रे की बीहड़ हवाएं बताएंगी तुम्हें
इस देश का इतिहास ।

इस टीले के पीछे ऐसे कई और टीले हैं
किसी पर उग आए हैं जंगल
कोई ओढ़ रहा घास-फूस
कहीं पर खंडहर और कुछ यों ही पथरीले
तुम चले जाना उन टीलों के पीछे तक ।

चमकने लग जाएगी एक प्राचीन पगडण्डी
भटकती हुई कोई हिनहिनाहट आएगी
कहीं घाटी में से
घंटियों और घुंघरुओं की झंक
अभी कौंध उठेगी वह गुप्त बस्ती
धुंआती हुई अचानक
अनिन्द्य हिमकन्याएं जो सपनों में देखीं थीं
हैरतअंगेज कारनामें दंत कथाओं वाले महानायक के

घूसर मुक्तिपथों पर भिक्खु लाल सुनहले
मणि-पद्म उच्चार रहे
ज़िंदा हो जाएगा क्रमशः -
पूरा का पूरा हिमालय तुम्हारा सोचा हुआ ।
लेकिन उस से पहले मेरे दोस्त

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस बेलौस ढलान पर लापरवाही से बिखरी
चट्टानों की ओट में खोज लेना
यहीं कहीं लेटा हुआ मिल सकता है
आलसी काले भालू सा
इस बैसाख की सुबह
धीरे से करवट बदलता इस देश का इतिहास।

उधर ऊंचाई पर खड़ी है जो टापरी
फरफराती प्रार्थना की पताकाएं रंग बिरंगी
गडरियों के साथ चिलम सांझा करते
किसी भी बूढ़े राहगीर से पूछ लेना तुम
वह क्या था
जिजीविषा या डर कोई अनकहा
हांकता रहा
जो उस के पुरखों को
पठारों और पहाड़ों के पार
जैसे मवेशियों के रेवड़

मुझ से क्या पूछते हो
महसूस लो खुद ही छू कर
पत्थर की इन बुर्जियों में
चिन चिन कर छोड़ गए हैं इस देश के सरदार
कितनी वाहियात और ख़राब यादें
उन तमाम हादिसों के ब्यौरे
जिन के जख्म ले कर लोग यहां पहुंचे
क्या कुछ खोते और खर्च कर डालते हुए
यहां दर्ज है एक एक तफसील
पूरा लेखा जोखा मुश्किल वक्तों का।

उस गडरिए की बांसुरी की धुन में
छिपी हैं बेशुमार गाथाएं
तुम सुनते रहना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे विद्वान दोस्त, उन बेतरतीब यादों में से
चुनते रहना अपना मन मुआफिक साक्ष्य
लेकिन टहल लेना उस से पहले
इस नाले के पार वाली रीढ़ियों पर
सुनना कान लगा कर
चंचल ककशोटियों और मासूम चकोरों की
प्रणय ध्वनियों सा गूंजता मिल जाएगा
इस देश का इतिहास...

मुझ से क्या पूछते हो
मैं तो बस यहां तक आया हूं
बिलकुल तुम्हारी तरह ।

1991

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन सलोनों की भाषा सीख लो

खिड़की के शीशों से बरफ की परतें खुरचते हुए
दूर तूफान में कुछ सफेद लोथों की तरह
हिलते देखा था उन्हें
उलझे हुए गुत्थम गुत्था

यह प्रणय हो सकता है
या फिर आखेट!

कभी कुछ छोटे बड़े
पंजों के निशान दिख जाते हैं
उलझे हुए
हड़प्पा की जटिल लिपियों जैसे....
कहते हैं बड़ा कुछ दर्ज रहता है बरफ की सतह पर
बशर्ते कि आप को पढ़ना आता हो
यहां इन्हीं आदिम भालुओं का साम्राज्य है
जो परम ज्ञानी हैं
भूख लगें पर भोजन तलाशते
थक जाने पर सो जाते
ये सलोने पढ़ाकू जीव ही बता सकते हैं, तुम्हे
इस धरती के बरफ हो जाने का इतिहास

फासिल की तरह ज़िंदा बचा होगा
अतल गहराईयों में जो
बस, तुम इनकी भाषा सीख लो।

सुमनम, मार्च, 2005

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गांव से लौटता कवि

पूरे एक महीने बाद मैं गांव गया
मैंने रिशू, निशू और ईशू को टाफियां दीं
और खुश हुआ

मैंने बूढ़े छेटुक मामा और
डोल्मा मामी का हाल चाल पूछा
और खुश हुआ

मैंने भाई की धूल भरी देह पर
एक जोर की जफ्फी मारी
और खुश हुआ

मैं खेत से मिट्टी का
एक ढेला उठा कर सूंघा
और खुश हुआ

कुहुल के बीचों बीच फंसा
एक पत्थर हटा कर करीने से एक तरफ रखा
और खुश हुआ

बुआ, बहन, पत्नी
गोरखा और दुमका मजदूरों को
कलेवा पहुंचाया
वहां झाड़ के नीचे बैठ कर कविताएं पढ़ने लगा
और खुश हुआ
फिर सुरेश सेन निशांत को फोन लगाया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि शिरीष कुमार मौर्य और नरेश चंद्रकर ने
इधर कमाल की कविताएं लिखीं हैं
उस ने कहा,
तुम केशव तिवारी और राहुल राजेश को भी जरूर पढ़ना
और मैं खुश हुआ

इतना खुश हुआ कि दनादन कविताएं लिख मारीं

गांव से लौटते हुए अपने खटारा मारुति 800 में
मैं कविताओं और खुशियों से भरा भरा था
कि सहसा एक आवाज़ मेरे कान में गूंजी
'सावधान ! रफ़्तार जरा कम रखो
गांव के कवि ...!'

मेरी बाएं कान की लौ
उस आवाज की तपिश से
देर तक झुलसती रही

10-04-2010

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक आदमी होता था

पहले एक गौरैया होती थी
एक आदमी होता था
लेकिन आदमी इतना ऊंचा उड़ा
कि गौरैया खो गई!

पहले एक पहाड़ होता था
एक आदमी होता था
लेकिन आदमी ऐसे तन कर खड़ा हुआ
कि पहाड़ ढह गया!

पहले एक नदी होती थी
एक आदमी होता था
लेकिन आदमी ऐसे वेग से बहा
कि नदी सो गई!

पहले एक पेड़ होता था
एक आदमी होता था
लेकिन आदमी ऐसे ज़ोर से झूमा
कि पेड़ सूख गया!

पहले एक पृथ्वी होती थी
एक आदमी होता था
लेकिन आदमी इतने ज़ोर से घूमा
कि पृथ्वी रो पड़ी !

रो पड़ी...
कि पहले एक आदमी होता था

कुल्लू, 4- 05-2010

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक अच्छा गांव

एक अच्छे आदमी की तरह
एक अच्छा गांव भी
एक बहुचर्चित गांव नहीं होता

अपनी गति से आगे सरकता
अपनी पाठशाला में ककहरा सीखता
अपनी ज़िंदगी के पहाड़े गुनगुनाता
अपनी खड़िया से
अपनी सलेट पट्टी पे
अपने भविष्य की रेखाएं उकेरता
वह एक गुमनाम किस्म का गांव होता है

अपने कुंए से पानी पीता
अपनी कुदाली से
अपनी मिट्टी गोड़ता
अपनी फसल खाता
अपने जंगल के बियाबानों में पसरा
वह एक गुमसुम किस्म का गांव होता है

अपनी चटाईयों और टोकरियों पर
अपने सपों की अल्पनाएं बुनता
अपने आंगन की दुपहरी में
अपनी खटिया पर लेटा
अपनी यादों का हुक्का गुड़गुड़ाता
चुपचाप अपने होने को जायज़ ठहराता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह एक चुपचाप किस्म गांव होता है
एक अच्छे गांव से मिलें
चुपचाप जाना पड़ता है
बिना किसी योजना की घोषणा किए
बिना नारा लगाए
बिना मुद्दे उछाले
बिना परचम लहराए
एक अच्छे आदमी की तरह

केलंग, 21-05- 2010

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस गांव को उन बच्चों की नज़र से देखना है

इस गांव तक पहुंच गया है
एक काला, चिकां, लम्बा-चौड़ा राजमार्ग

जीभ लपलपाता
लार टपकाता एक लालची सरीसृप

पी गया है झरों का सारा पानी
चाट गया है पेड़ों की तमाम पत्तियां

इस गांव की आंखों में
झोंक दी गई है ढेर सारी धूल

बदरंग कर दी गई है
इस गांव की हरी भरी देह

चैन गायब है
इस गांव के मन में
सपनों की बयार नहीं
संशय का गर्दा उड़ रहा है

बड़े बड़े डायनोसोर घूम रहे हैं
इस गांव के स्वप्न में
तीतर, कोयल और हिरन नहीं
दनदना रहे हैं हेलिकॉप्टर
और भीमकाय डम्पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस काले चिकने लम्बे चौड़े राजमार्ग से होकर
इस गांव में आया है
एक काला, चिकना, लम्बा-चौड़ा आदमी

इस गांव के बच्चे हैरान हैं
कि इस गांव के सभी बड़े लोग एक स्वर में
उस वाहियात आदमी को 'बड़ा आदमी' बतला रहे
जो उन के क्रिकेट खेलें की जगह पर
काला धुंआ उड़ों वाली मशीन लगाना चाहता है !

जो उनके खिलौना पनचक्कियों
और नन्हे गुड्डे गुड्डियों को
धकियाता रौंदता आगे निकल जाना चाहता है !

"मुझे इस गांव को
एक 'बड़े आदमी' की तरह डाक बंगले
या शेवेर्ले की काली खिड़की से नहीं देखना है

मुझे इस गांव को
उन 'छोटे बच्चों' की तरह अपने
कच्चे घर के जर्जर किवाड़ों से देखना है"
और महसूसना है
इन दीवारों का दरक जाना
इन पल्लों का खड़खड़ाना
इस गांव की बुनियादों का हिल जाना !

पल-लमो, जून 7, 2010

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीचे देखते हुए चलना

सब से ज्यादा मज़ा है
नीचे देखते हुए चलने में
और नीचे गिरी हुई हर सुंदर चीज़ को सुंदर कहने में

आज मैं माफ़ कर देना चाहता हूं
उन ख़्वाहिशों को
जो लगभग दनदनाती हुई चली आईं थीं
मेरी ज़िंदगी में
मुझे ऊपर उठाने के लिए
और नीचे देखते हुए चलना चाहता हूं सच्चे मन से

आखिरकार उबर ही जाऊंगा
नीचे देखते देखते उस खुशफ़हमी से
कि दुनिया वही है जो मेरे सामने है --
खूबसूरत औरतें, बढ़िया शराब, चकाचक गाड़ियां
और तमाम खुशनुमा चीजें
जिनके लिए एक हसरत बनी रहती है भीतर

एक दिन मानने लग जाऊंगा नीचे देखते-देखते
कि एक संसार है
बेतरह रौंद दी गई धूल भरी लीकों का
कीड़ों और घास पत्तियों के साथ
देखने लग जाऊंगा नीचे देखते देखते एक दिन
अब तक अनदेखे रह गए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे अपने ही घिसे हुए चप्पल और पांयचों के दाग
एक भूखी ठांठ गाय की थूथन
एक काली लड़की की खरोंच वाली उंगलियां
वहां मिट्टी में गरक हो गई
कुछ फिर से काम आने वाली चीज़ें खोजती हुई --
बीड़ी के टोटे
चिड़ियों और तितलियों के टूटे हुए पंख
मरे हुए चूहे धागों से बंधे हुए
रैपर, ढक्कन, टीन ----
बरत कर फेंक दी गई कितनी ही चीज़ें !

उस संसार को देखना
एक गुमशुदा अतीत में झांकने जैसा होगा
और इस से पहले कि धूल में आधी दबी उस अठन्नी को
लपक कर बंद कर लूं मुट्ठी में
वैसी बीसियों चमकने लग जाएंगी यहां-वहां
मानो कोई स्वप्न हो अद्‌भुत
दूर धुंधलके में से तैर कर आता हुआ
बरबस सच हो जाना चाहता हुआ

ठीक ऐसा ही कोई दिन होगा
नीचे देखते देखते
जब चुपके से प्रवेश कर जाऊंगा उन यादों में
जब मैं भी वहां नीचे ही था कहीं
बहुत नीचे
और बेहद छोटा बच्चा सा
बड़ा छटपटाता यहां ऊपर पहुंचने के लिए
और समझने लग जाऊंगा कि अच्छा किया
जो तय कर लिया वक्त रहते
नीचे देखते हुए चलना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बातचीत

ऐसे बेखटके शामिल हो जाने का मन था
उस बातचीत में जहां एक घोड़े वाला
और कुछ खानगीर थे ढाबे के चबूतरों पर
ऐसे कि किसी को अहसास ही न हो

वहां बात हो रही थी
कैसे कोई कौम किसी दूसरे कौम से अच्छा हो सकता है
और कोई मुल्क किसी दूसरे मुल्क से

कि कैसे जो अंगरेज थे
उन से अच्छे थे मुसलमान
और कैसे दोनों ही बेहतर थे हमसे

कि क्या अस्सल एका था बाहर के कौमों में
मतलब ये जो मुसल्ले बगैरे होते हैं
कि हम तो देखने को ही एक जैसे थे ऊपर से
और अंदर खाते फटे हुए

सही गलत तो पता नहीं हो भाई,
हम अनपढ़ आदमी, क्या पता -
पर देखाई देता है साफ-साफ
कि वो ताक़तवर है अभी भी

अभी भी जैसे राज चलता है हम पे
उनका ही - एह !
कौन गिनता है हमें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और कहां कितना गिनता है
डंगर की तरह जुते हुए हैं उनही की चाकरी में-एह !

तो केलंग से बरलचा के रास्ते में
जीह के ओर्ले तर्फ एक जरोङ मिलता है आप को-एह !
पेले तो क्या घर क्या पेड़ कुच्छ नहीं था
खाली ही तो था -एह !
अब रुळिङ्बोर केते कोई दो चार घर बना लिए हैं
ंले के सिरे पे जो भी लाल पत्थर है
लाल भी क्या होणा अ।दर तो सुफेदै है
सब बाढ़ ने लाया है
एक दम बेकार
फाड़ मारो, बिखर जाएगा
कुबद का खान ऊपर ढांक पर है
पहाड़ से सटा हुआ एक दम काला पत्थर
लक्कड़ जैसा मुलायम और साफ
काम करने को सौखा - एह !

बल्ती लोग थे तो मुसलमान
पर काम बड़ा पक्का किया
सब पानी का कुहुल
सारी पत्थर की घड़ाई
लौह्ल का सारा घर में कुबद इन लोग बनाया
अस्सल जिम्दारी लौह्ल में इन के बाद आया
बड़ा बड़ा से-रि इनो ही कोता --- एह !
और बेशक धरम तब्दील नहीं किया
जिस आलू की बात आज वो फकर से करते हैं
पता है, मिशन वाले ने उगाया
पैले क्या था

और हमारा आदमी असान फरमोश
गदर हुआ तो नालो के अंदर भेड़ बकरी की तरह काट दिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

औरत का जेबर छीना
बच्चा मार दिया
ए भगवान
कितना तो भगा दिया बोला जोत लंघा के
देबी सींग ने
हमारा ताऊ ने
मुंशी साजा राम ने
सब रेमु् दिल भलमाणस थे --- एह !

और बंगाली पंजाबी साब भादर लोगों ने क्या किया
अंग्रेज से मिल कर
सब कीम्ती कीम्ती आईटम अम्रीका और लंदन पुचाया
अजाबघर बनाने के लिए - एह !

ये सब तेज खोपड़ी
ताक़त पास में हो तो दमाग और भी तेज़ घूमता
बहुत तेजी से और एकदम उलटा
फिर हो गया पूरा कौम बदनाम एकाध आदमी करके
एक मछली,
सारा तलाप खन - खराप, एह !

और पत्थरों के बारे में जो बातें थीं
वो भी लगभग वैसी ही थीं
कि उन में से कुछ दर्ज वाले होते हैं
और कुछ बिना दर्ज वाले होते हैं

कि परतें कैसे बैठी रहतीं हैं
एक पर एक चिपकी हुईं
कि कहां कैसी कितनी चोट पड़ें पर
दर्ज दिखने लग जाते हैं साफ - साफ
जैसा मर्जी पत्थर ले आईए आप
और जहां तक घड़ाई की बात है
चाहे एक अलग् थलग दीवार चिननी हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या नया घर ही
या कुछ भी बनाना हो
दर्ज वाले पत्थर तो बिल्कुल कामयाब नहीं हैं

आप ध्यान देंगे तो पता चलेगा
वह एक बिना दर्ज वाला पत्थर ही हो सकता है
जो गढ़ा जा सकता है मन मुआफिक
कितने चाहे क्यूब काट लो उस के
और लम्बे में, मोटे में
कैसे भी डंडे किाल लो
बस पहला फाड़ ठीक पड़ना चाहिए
और
बशर्ते कि मिस्त्री कांगड़े का हो - एह !

मिस्तरी तो कनौरिये भी ठीक हैं
कामरू का किला देखा है
बीर भद्दर वाला ?

अजी वो कनौरियों ने थोड़े बणाया
वो तो सराहणी रामपुरिए होणे

रेण देओ माहराज, काय के रामपुरिए
यहीं बल्हड़ थे सारे के सारे
सब सांगला में बस गए भले बक्त में
रोजगार तो था नहीं कोई
जांह राजा ठाकर ले गया, चले गए - एह !

बुशैर का लाका है तो बसणे लायक, वाकई......

धूड़ बसणे लायक !
पूह तक तो बुरा ही हाल है
ढांक ही-ढांक
नीचे सतलज - एह !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आगे आया चांग-नको का एरिया
यांह नही बोलता कौरी में, कोई नहीं
सारे के सारे भोट आ कर बस गए ऊपर से - एह !
बांह की धरती भी उपजाऊ और घास भी मीठी

ज्ञीरू से ले के ज्ञुर्चा तक सब पैदावार
और पहाड़ के ऊपर रतनजोत - एह !

नीचे तो कुछ पैदा नहीं होता
और घास में टट्टी का मुश्क
हे भगवान ...
घोड़े को भी पूरा नहीं होता
पेड़ पर फकत चुल्ली और न्यूजा - एह !

कौर वाला नही खाता आंज, कोई नहीं
तब तो भाषा भी अजीब है
न भोटी में, न हिन्दी मेंय अज्ज्ज्जीब ही

पर भाई जी
सेब ने उनो को चमका दिया है - एह !

हिमाचल में जिस एरिया ने सेब खाया
देख लो
रंग ढंग तो चलो मान लिया
जबां ही अलग हो गई है !

सेब हमारे यहां था तो पहले से ही
पर जो बेचने वाला फल था
वह एक इसाई ले के आया था
ऐसा नही कि कुल्लू को सेब ने ही उठाया था
क्या क्या धंदे थे कैसे कैसे
किस को मालूम नहीं ?

वो तो कोई गोकल राम था
जो पंडत नेहरू के ठारा बार पुकारने पे भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तबेले में छिपा रहा था
पनारसा के चिली तरफ
और ठारा दिन उस की मशीन रुकी रही
पानी से चलती थी भले बकत में

लाहोर की बी ए थी अगले की
पर शरम के मारे बाहर नहीं आया
तो किस्मत भी बचारे की तबेले में बंद हो गई

बेद राम था तेज आदमी
पैर पकड़ के जमीनें कराई अपने नाम

सोसाटी बणा के – एह !
आज मालिक बना हुआ है
पलाट काट के बेच रहा है
कलोनी खड़ी कर दी अगले ने

कौण पूछ सकता है? – एह !
मैं केता हूं कि लग्गे रेणा पड़ूता है
क्या पता कब दरवाजा खुल जाए – एह !

'आखीर में जब वहां से चलने को हुआ चुपचाप
तो तय था कि बातों की जो परतें थीं
वे तो हू ब हू वैसी ही थीं
जैसी समुदायों, मुल्कौन, पत्थरों, घोड़ों और तमाम
ऐसी चीजों के होने व बने रहने की शर्तें थीं
एक के भीतर से खुलती हुई दूसरी थी
कोई तीसरी भी
कहीं कहीं नज़र आ जाती
बारीकियों में छिपी हुई
जहां कोई जाना नहीं चाहता था

सच बात तो यह है कि
बात कहें के लिए आप को आवाज़ नहीं होना होता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब कि परतों को सुनने के लिए आप को पूरा एक कान
और देख पाने के लिए आंख हो जाना होता था

मुझे लगा कि यही समय था
बातचीत के बारे बात करने का

कि एक जहनी दुनियां में खर्च हो जाने से बचने के लिए
कितनी बड़ी नेमत है बातचीत?

बेवजह भारी हुए बिना और बेमतलब अकड़े बिना
कड़क चा सुड़कते हुए,
अभी से तुम कहते रह सकते हो अपनी बातें
गलत सलत, टूटी फूटी जैसे भी
क्यों कि तय है, एक दिन तुम चुप हो जाने वाले हो

और अंतिम वाक्य जिसे छोड़ कर चले जाने का
कतई मन नहीं था --'

इस दुआ सलाम और गप ठप से बड़ा
सत्त नही होता, कोई नहीं
वैसे भी इस धम्मड़ धूस दुनिया के अंदर
इतने बड़े सत्त को ले के चाटणा है कि क्या
जेह बता दो तुम मेरे को - एह?

कुल्लू , 25-3-2011

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी आंखों से देखता हूं

लौटाता हूं
तमाम चश्में तेरे दिए हुए
कि सोचता हूं
अब अपनी ही आंखों से देखूंगा
मैं अपनी धरती

लोग देखता हूं यहां के
सच देखता हूं उन का
और पकता चला जाता हूं
उन के घावों और खरोंचों के साथ

देखता हूं उन के बच्चे
हंसी देखता हूं उन की
और खिलखिला उठता हूं
दो घड़ी तितलियों और फूलों के साथ

औरतें देखता हूं उन की
उनकी रुलाई देखता हूं
और बूंद बूंद रिसने लगता हूं
अंधेरी गुफाओं और भूतहे खोहों में

अपनी धरती देखता हूं
अपनी ही आंखों से
देखता हूं उस का कोई छूटा हुआ सपना
और लहरा कर उड़ जाता हूं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अचानक उस के नंए आकाश में

लौटाता हूं ये चश्में तेरे दिए हुए
कि इन में से कुछ का
छोटी चीज़ों को बड़ा दिखाना
और कुछ का
दूर की चीज़ों को पास दिखाना
अच्छा न लगा

कि इन में से कुछ का
साफ शफ्फाक चीजो को धुंधला दिखाना
और यहां तक कि कुछ का
धुंधली चीज़ों को साफ दिखाना
भी अच्छा न लगा

देखता हूं अपनी यह धरती
अब मेरी अपनी ही आंखों से
जिस के लिए वे बनीं हैं
और देखता हूं वैसी ही उतनी ही
जैसी जितनी कि वह है
और कोशिश करता हूं जानने की
क्या यही एक सही तरीका है देखने का !

15-09-2011

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जी सकते थे झूम-झूम हम

चहकी चिड़िया बोला मुर्गा और क्षितिज ने रंग बिखेरा !

लंबी चादर तान तान कर कितनी सुबहें छोड़ गए हम
कल क्या होगा इस शंका में कितना जीवन भूल गए हम
सुख बटोरने की इच्छा में दुख के फंदे झूल गए हम
कितनी शामें टाल गए जो जी सकते थे झूम झूम हम
कितनी नदियां चूक गए जो पी सकते थे घूंट घूंट हम

छाता ले कर बैठ रहे सब उकडूं हो कर जिस्म समेटे !

क्या बादल थे कैसी बिजली भीनी भीनी मिट्टी पुरनम
धो सकती थी सब जख्मों को कैसी बारिश थी वो झमझम
भीग ही जाते खूब पसर कर धूप लगी थी नरम मुलायम
हो सकता था जीना उस पल नाहक भटके घूम घूम हम
कितनी नदियां चूक गए जो पी सकते थे घूंट घूंट हम

मिला नहीं उस पार मसीहा अच्छा था मझधार ही यारो !

कितने रंग थे कितनी यादें कितनी ध्वनियां कितने मौसम
पत्थर जंगल माल मवेशी बजते ढोल नगाड़े ढम ढम
लेकिन नज़रें दूर टिकीं थीं बहे चले थे लहर लहर हम
कितना सागर तैर गए जो खो सकते थे डूब डूब हम
कितनी नदियां चूक गए जो पी सकते थे घूंट घूंट हम
अच्छा खासा जोत रहे थे इस जीवन की मुश्किल खेती !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी जगह पे खोद के सारे बो सकते थे बीज यहीं हम
कहीं पे खिलते फूल खुशी के हो सकते थे कहीं कहीं गम
रो सकते थे गा सकते थे सो सकते थे यहीं कहीं हम
टूटे दिल और फटी बिवाई सी सकते थे चूम चूम हम
कितनी शामें टाल गए जो जी सकते थे झूम झूम हम

कितनी नदियां चूक गए जो पी सकते थे घूंट घूंट हम

27 -11- 2011

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढालपुर कॉलेज से लौटती लड़कियां

लड़कियां सेंडिल सटकाती चलती हैं
ढालपुर की फुटपाथों पर
चुस्त-फुर्त
गोल-मटोल

चटक-चट्ट लड़कियां
आंखों से मुस्काती
खुश्बुएं बिखेरती
भेखड़ी बिजलेश्वर काईस और रोहतांग से उतरी ये
लड़कियां
चपर-चपर खरीददारियां करती
बाजार की भीड़ में ऐसे घुलमिल जाती हैं कभी
इन्हें अलग-अलग पहचानना कठिन हो जाता है।

सपने तैरते रहते हैं सपने
इनकी छोटी चमकीली आंखों में
अपने-अपने सपने
तरह-तरह के -
जिंदगी में कुछ अलग कर दिखों के
कुछ ढर्रे पर चलती जिंदगी का हिस्सा बन
औरों के जैसे बन जाने के।
ज्यादातर तो किसी के कंधे से कंधा मिला
हाथों में हाथ डाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत दूर निकल जाने के
और कुछ थोड़े से, सब से अलग
बहुत दूर निकले हुओं के उजड़ते घर सनभालने के
आश्चर्यजनक
अजीबोगरीब
सपने ही सपने।

मछलियां सपने एक पल को
तिर आते हैं पानी की सतह पर
झुंड के झुंड
चांदी सा चमकते
फिर लहरों में विलीन हो जाते हैं सहसा
छोड़ जाते पीछे
ठहरी हुई नदी का कांपता यथार्थ।
फिर इन सपनों को अलग-अलग पहचानना कठिन हो जाता है।

मछुआरा बस चंद दिन और...
किसी दुश्चिंताओं से भरी दोपहर
जब भीमकाय युक्लिप्टस झूल रहे होंगे सड़क के किनारे
मछुआरा समय
चुपके से उतार रहा होगा व्यासा में अपना जाल
आतंक से बेतरतीब हो रही होगी मछलियां
धीरे-धीरे बिछुड़ें लगेंगी लड़कियां
फिर पनीली आंखों में
कुछ और सपने लिए आएंगी कुछ और लड़कियां
फिर उन सपनों और लड़कियों को
अलग-अलग पहचानना कठिन हो जाएगा।

कुल्लू, 1985

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माँ, हपीज और आदिम चांदनी

यह कोई आदिम युग ही होगा
आधी-आधी रात तक जागे रहते हैं वे लोग
सांसे रोक
चांद उगने की प्रतीक्षा में

जब कि संतरई-नीली चांदनी ने पहले ही
पहाड़ के पीछे वाली घाटी में बिछना शुरू कर दिया है

चांद के घटने-बढ़ने का हिसाब
तमाम कलाओं की बारीकियां
भोज पत्रों में दर्ज करते हैं वे सनकी लोग
पल, घड़ी, पहर और तिथियां
उनहों ने इन ब्यौरों के मोटे भूरे ग्रंथ बना रक्खें हैं

कुछ लोग एक झाड़ की ओट में
भारी धारदार खांडों से
दुर्बल मृगशावकों के गले रेत रहे हैं
और कुछ अय
गुपचुप पड़ोसी कबीले पर हमले की योजनाएं बना रहे हैं
कद्दावर ऊंट और घोड़े और कुत्ते पाल रखे हैं उन्हों ने बड़े-बड़े
अपने पालतुओं के जैसे ही वहशी दरिंदे हैं वे -
तगड़े, खूंखार, युद्धातुर
अपने निश्चयों में प्रतिबद्ध
अपने प्रारब्ध के प्रति निश्चिंत

जाने कब से उनके आस-पास विचर रहा हूं मैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बलवान शिकारियों के उच्छिष्ट पर पलने वाला लकड़बग्घा
हहराते अलाव पर भूजे जा रहे
लाल गोश्त की आदिम गंध पर आसक्त
मेरे अपने चांद की प्रतीक्षा में ।

मुझे भी नींद नहीं आती आधी-आधी रात तक ।
मैं भी उतना ही उत्कट
उतना ही आश्वस्त
वैसे ही आंखें बिछाए
उतना ही क्रूर
उतना ही धूर्त
अपने निजी चेतनाकाश के फर्जी नक्षत्रों का कालचक्र तय करने
अपना ही एक छद्म पंचांग निर्धारित करने की फिराक में
अपना मनपसंद अखबार ओढ़
(जिस में मेरे प्रिय कवि के मौत की ख़बर छपी है)
अपनी ही गुनगुनी चांदनी में सराबोर होने की कल्पना में
उतना ही रोमांचित

महकती फूल सी गुलाबी रक्कासा
पेश ही करने वाली है मदिरा की बूंदें
कि कैसी भीनी-भीनी खुश्बू आई है
अचानक अखबार के भीगने की !

यह बारिश ही होगी
चांदनी में भीगे अक्षरों के पार
मैं प्रयास करता हूं बादलों की नीयत पढ़ें का
रह-रह कर उभरते हैं मेरे प्रिय कवि के गाढ़े अक्षर
बारिश में घुलमिल कर लुप्त हो जाते हैं
मैं पलकें झपकाता रह जाता हूं निपट अनपढ़
युगों से किसी और की कविता नहीं पढ़ी
किसी और का दर्द नहीं समझा
और भीतर का टीस गहराता ही गया है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी बीमार बूढ़ी माँ ने दबे पांव कमरे में प्रवेश किया है
मैं अख़बारों के नीचे उसके टखनों का घाव देख सकता हूं
मेरी जांघों में असहनीय जलन हो आई है
जहां माँ के जैसे फफोले उग आए हैं
चांदनी रात का चलता जादू रुक गया है
बंजारों का डेरा तिरोहित हो गया है
मृग शावकों के ताजा लहू की गंध कायम है
गीले अख़बार से भुने गोश्त की महक अभी उठ रही है
और माँ की तप्त आकांक्षाओं से छनते हुए आ रहे हैं
सिहरे-सहमें से शब्द -
बेटा जिस्म ठंडा रहा है
यह ऊनी शाल ओढ़ा देना
जुराबों का यह जोड़ा भी ---
और तुम यह सोचते क्या रहते हो यहां लेटे-लेटे
कुछ करते क्यों नहीं बाहर जाकर...

मुझे लगता है
मुझे जीना है अपनी चांदनी से बाहर भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी जेब में एक सूरज होता था

(ट्रंक में दिवंगत माँ की चोलू-बास्केट देख कर)

तुम्हारी जेबों में टटोलें हैं मुझे
दुनिया के तमाम खजाने
सूखी हुई खुबानियां
भुने हुए जौ के दाने
काठ की एक चपटी कंघी और सीप की फुलियां
सूंघ सकता हूं गंध एक सस्ते साबुन की
आज भी
मैं तुम्हारी छाती से चिपका
तुम्हारी देह को तापता एक छोटा बच्चा हूं माँ
मुझे जल्दी से बड़ा हो जाने दे

मुझे कहना है धन्यवाद
एक दुबली लड़की की कातर आंखों को
मूंगफलियां छीलती गिलहरी की
नन्ही पिलपिली उंगलियों को

दो दो हाथ करने हैं मुझे
नदी की एक वनैली लहर से
आंख से आंख मिलानी है
हवा के एक शैतान झोंके से

मुझे तुम्हारी सब से भीतर वाली जेब से
चुराना है एक दहकता सूरज
और भाग कर गुम हो ज़ाना है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी अंधेरी दुनिया में एक फरिश्ते की तरह
जहां औंधे मुंह बेसुध पड़ीं हैं
तुम्हारी अनगिनत सखियां
मेरे बेशुमार दोस्त खड़े हैं हाथ फैलाए

कोई खबर नहीं जिनको
कि कौन सा पहर अभी चल रहा है
और कौन गुज़र गया है अभी अभी

सौंपना है माँ
उन्हें उनका अपना सपना
लौटाना है उनहें उनकी गुलाबी अमानत
सहेज कर रखा हुआ है
जो तुम ने बड़ी हिफाजत से
अपनी सब से भीतर वाली जेब में !

सुमनम, 05-12-2010

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता नहीं लिख सकते

खाड़ी युद्ध में एक बागी सैनिक के उद्गार

अच्छे मौसम में
हम मैच देखते हैं
कुरते और ट्राऊजर उतार कर
गाढ़े चश्में पहन कर
हमारी चिकनी चमड़ियों पर
झप झप धूप झरता है अच्छे मौसम में
उमंग से ऊपर उठता है झंडा
राष्ट्रीय धुन के साथ
हम खड़े हो जाते हैं सम्मान में
अपने भावुक राष्ट्रपति का अनुसरण करते हुए
होंठों में बुदबुदाते हैं अधबिसरे राष्ट्र गान
आंखों के कोर भर जाते हैं
बूद बूंद खुशियां
छप छप छलकतीं गुलाबी गालों पर
हमारे बगलों में सुंदर मस्त लड़कियां होती हैं
उत्तेजक पिंडलियों वाली
उछलती फुदकतीं
हवा उड़ाती है
स्कार्फ और मुलायम लटें
बिखेरतीं हैं इत्र की गंध ताजी
रविवार की सुबह
कुदरत शरीक होती है - रोमांचित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारे उत्सव में
नीला आकाश
हरी घास
युद्ध से दूर...

हम मैच देखते हैं
अच्छे मौसम में
कविता नहीं लिख सकते

घटिया मौसम में
सूरज मुंह छिपा लेता है गर्द गुबार में
आसमान से बरस रही होती है आग
रात दिन उड़ते हैं जंगी जहाज़
नींद नहीं आती
रॉकेट और बमों के शोर में
तपता रहता है रेत दिन भर
मरीचिकाओं में से प्रकट होती रहतीं हैं
फौलादी बख्तरबंद गाड़ियां
एक के बाद एक
अनगिनत
रेडियो सिग्नल, आड़े तिरछे बंकर और ट्रेंच
बारूदी सुरंगें, ग्रेंड फटते हैं रह-रह कर
और कान के पर्दों में घंटियां बजती रहती हैं निरंतर
कटीली तारों में उलझी हुई जांघें
कान रही होती हैं बेतरह
दुख रहा होता है पसलियों में खुभा हुआ संगीन
गुड़मुड़ अजनबी भाषाएं
बरबर और भयावह
रौंदती चली जातीं हैं हमारे ज़ख्मी पैरों को
पसीना पसीना हो जाते हैं हमारे माथे
हम चीख नहीं पाते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सांसें रोक, आतंकित
फटी आंखों से करते रह जाते हैं इंतज़ार
दुश्मन के गुज़र जाने का...

हम युद्ध झेलते हैं
घटिया मौसम में
कविता नहीं लिख सकते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

केलंग -- सर्दियां 2004

1. हरी सब्जियां

'फ्लाईट में हरी सब्जियां आईं हैं
तीन टमाटर
दो नींबू
आठ हरी मिर्चें
मुट्ठी भर धनियां
सजा कर रक्खी जाएंगी सब्जियां
ट्राईबल फेयर की स्मारिका के साथ
महीना भर
जब तक कि सभी पड़ोसी सारे कुलीग
जान न लें
'फ्लाईट' में हरी सब्जियां आईं हैं

2, पानी

बुरे वक्त में जम जाती है कविता भीतर
मानो पानी का नल जम गया हो
चुभते हैं बरफ के महीं क्रिस्टल
छाती में
कुछ अलग तरह का होता है दर्द
कविता के भीतर जम जाने का
पहचान में नही आता मर्ज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
न मिलती है कोई चाबी
'स्विच ऑफ' रहता है अक्सर
सेलफोन फिटर का

3. बिजली

'सिल्ट' भर गया होगा 'फोरवे' में
'चैनल' तो शुरू साल ही टूट गये थे
छत्तीस करोड़ का प्रोजेक्ट
मनाली से सप्लाई फेल है
सावधान
पावर कट लगने वाला है
दो दिन बाद ही आएगी बारी
फोन कर लो सब को
सभी ख़बरें देख लो
टीवी पर
सभी सीरियल
नहा लो जी भर रोशनियों में खूब मल मल
बिजली न हो तो
ज़िंदगी अंधेरी हो जाती है

4- सड़कें

अगली उड़ान में शिफ्ट कर दिया जाएगा
'पथ परिवहन निगम' का स्टाफ
केवल नीला टैंकर एक बार्डर रोड्स का
रेंगता रहेगा छक छक छक
सुबह शाम
और कुछ टेक्सियां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तान्दी पुल पचास रुपये
स्तींगरी पचास रुपये
भला हो बॉर्डर रोड्स का
पहले तो इतना भी न था
सोई रहतीं थीं सड़कें, चुपचाप
बरफ के नीचे
मौसम खुलने की प्रतीक्षा में
और पब्लिक भी

कोई कुछ नहीं बोलता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैत्रेय, क्या तुम भी राजा की तरह आओगे?

(दलाई लामा के जिस्पा आने पर)

मैंने भी सुना था मैत्रेय,
तुम आने वाले हो
मैं भी आंखे बिछाए रहता था
आंगन में धूप तापता
फाट पे डंगर हांकता
खेत पे हल जोतता
लुगड़ी पीता मेलों में 'ठुच्च' नाचता -
हर शाम बिना भूले
गोद सोते बच्चे को
तुम्हारे आने की कहानियां सुनाता

पर सुनो तो
क्या राजसी इंतजाम हो रहा है तुम्हारे लिए यहां
पक्की चार दीवारियां
भारी भरकम दरवाज़े
बढ़िया लोहा
बढ़िया लकड़ी
बढ़िया सीमेंट
और खूब भव्य होना चाहिए
तुम्हारा सभागार
सोना, चांदी, मूंगे और फिरोजे
एकदम महल जैसा-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या तुम्हें इन तैयारियों की ख़बर है
मैत्रेय, क्या तुम भी लड़ोगे
एक राजा की तरह
आदमी को आदमी से लड़ाओगे ?

और उस बच्चे को क्या जवाब दूं
जो कहता है
बाबा, इस उजड्ड गांव में क्यों आने लगा मैत्रेय?
वह तो धूमता होगा जहाजों में
ताईवान, अमेरिका, स्विट्जरलेंड
इतना बड़ा आदमी...
हमें भी निकल लेना चाहिए
अपने मैत्रेय की खोज में सिंगापुर।

मैत्रेय, क्या तुम सचमुच आओगे?
अगर आओगे तो क्या राजा की तरह आओगे
घोड़े पे सवार हो के
लाव लश्कर के साथ
या कि एक गरीब भिक्खु की तरह
गांव की मेरी झोंपड़ी में?

रारिक, जुलाई 1993

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रातों-रात चलने वाले

यहां तक आए थे रातों रात चलने वाले
यहां रुक कर आग जलाई उन्होंने
ठिठुरती हवा में
इस पड़ाव पर पानी ढोया
गाड़े तम्बुओं के खूंटे

चूल्हे के पत्थर अब तक दीखतें हैं काले
और लकड़ियां अधगीली कितना जलीं रात भर
कितना वक्त था उनके पास तापने और सुस्ताने के लिए
जब कि कांपते रहे थे आंखों में
कितनी खराब यात्राओं के
कितनी बीत चुकी
कितनी ही बाकी रह गई यात्राओं के दुःस्वप्न...

समय की तरह
सब से आगे दौड़ गया था उनका सुकून
कितनी गुनगुनी थी पलभर की नींद
भयावह अंधड़ों की आशंका के बीच
बिखर गये थे जो पेचीदा सुराग ---

खोज रहे हम तन्मय
पदचिन्ह और अनाज के छिलके
और फलों की गुठलियां
और जो विसर्जित किए थे मल उनके पशुओं ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूत्र में रसायन जांच रहे
जहां गहरा हो गया है मिट्टी का रंग जरा

रातों रात चलने वाले
नहीं रुकते कहीं भी
कुछ लिख छोड़ें की नीयत से

तो भी
जाने क्या कुछ पढ़ने की कोशिश करते रहते
हर पड़ाव पर
हम जैसे कितने ही सिरफिरे !

छितकुल, जुलाई 2006

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरा आख़िरी रंग भी ले जाओ

हरियाली के साथ छीन ले गए
हजार रंग मेरे फूलों के
मेरी चांदनी की हज़ार रातें
चुरा ले गए हो नीली नदियां
और बेशुमार तितलियां
भोर का सूरज गहरा केसरिया

आओ, अब राख ले जाओ बचा हुआ
मेरी जली हुई झोंपड़ी का
ले जाओ कोयले बीन बीन कर
और हड्डियां मेरे मवेशियों की
मिट्टी ले जाओ मेरी धरती की सारी

फिर भी कुछ कमी रह रह गई हो
तो आओ खींच ले जाओ
मेरी शिराएं और धमनियां
चूस लो मेरे खून का आखिरी कतरा

मेरा क्या है
रह लूंगा जैसे तैसे
इस खोखली अंधेरी दुनियां में
तुम्हारा वह शहर सजना चाहिए
खिलता धड़कता
चहकता चमकता हुआ
एकदम जिंदा लगना चाहिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक बुद्ध कविता में करुणा ढूंढ रहा है

धुर हिमालय में यह एक भीषण जनवरी है
आधी रात से आगे का कोई वक्त है
आधा घुसा हुआ बैठा हूं
चादर और कम्बल और रजाई में
सर पर कनटोप और दस्ताने हाथ में
एक नंगा कंप्यूटर हैंग हो गया है
जब कि एक बुद्ध कविता में करुणा ढूंढ रहा है

तमाम कविताएं पहुंच रही हैं मुझ तक हवा में

कविता कोरवा की पहाड़ियों से
कविता चम्बल की घाटियों से
भीम बैठका की गुफा से कविता
स्वात और दजला से कविता
कविता कर्गिल और पुलवामा से
मरयुल, जङ-थङ, अमदो और खम से
कविता उन सभी देशों से
जहां मैं जा नहीं पाया
जबकि मेरे अपने ही देश थे वे

कविताओं के उस पार एशिया की धूसर पीठ है
कविताओं के इस पार एक हरा भरा गोण्ड्वाना है
कविताओं के थिसिस में ज़बर्दस्त खलबली है
कविताओं की थार पर खेजड़ी की पत्तियां हैं
कविताओं की फाट पर ब्यूंस की टहनियां हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविताओं के खड्ड में बल्ह के लबाणे हैं
कविताओं की धूल में दुमका की खदों हैं

कविता का कलरव भरतपुर के घना में
कविता का अवसाद पातालकोट की खोह में
कविता का इश्क चिनाब के पत्तों में
कविता की भूख विदर्भ के गांवों में

कविता की तराई में जारी है लड़ाई
पानी पानी चिल्ला रही है वैशाली
विचलित रहती है कुशीनारा रात भर
सूख गया है हज़ारों इच्छिरावतियों का जल
जब कि कविता है सरसराती आम्रपालि
मेरा चेहरा डूब जाना चाहता है उस की संदल-मांसल गोद में
कि हार कर स्खलित हो चुके हैं
मेरी आत्मा की प्रथम पंक्ति पर तैनात सभी लिच्छवि योद्धा
जब कि एक बुद्ध कविता में करुणा ढूंढ रहा है

सहसा ही
एक ढहता हुआ बुद्ध हूं मैं अधलेटा
हिमालय के आर पार फैल गया एक भगवा चीवर
आधा कंबल में आधा कंबल के बाहर
सो रही है मेरी देह कंचनजंघा से हिन्दुकुश तक
पामीर का तकिया बनाया है
मेरा एक हाथ गंगा की खादर में कुछ टटोल रहा है
दूसरे से नेपाल के घाव सहला रहा हूं
और मेरा छोटा सा दिल जोर से धड़कता है
हिमालय के बीचों बीच

सिल्क रूट पर मैराथन दौड़ रहीं हैं कविताएं
गोबी में पोलो खेल रहा है गेसर खान
कजूजाकौन और हूणों की कविता में लूट लिए गए हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिंदादिल खुश मिजाज जिप्सी
यारकंद के भोले भाले घोड़े
क्या लाद लिए जा रहे हैं बिला-उज्र अपनी पीठ पर
दोआबा और अम्बरसर की मंडियों में
न यह संगतराश बाल्तियों का माल-असबाब
न ही फारबिडन सिटी का रेशम
और न ही जङ्पा घूमंतुओं का
मक्खन, ऊन और नमक है
जब कि पिछले एक दशक से
या हो सकता है उस से भी बहुत पहले से
कविता में सुरंगें ही सुरंगें बन रही हैं !

खैबर के उस पार से
बामियान की ताज़ा रेत आ रही है कविता में
मेरी आंखों को चुभ रही है
करआ-कोरम के नुकीले खंजर
मेरी पसलियों में खुभ रहे हैं
कविता में दहाड़ रहा है टोरा बोरा
एक मासूम फिदायीन चेहरा
जो दिल्ली के संसद भवन तक पहुंच गया है
कविता का सिर उड़ा दिया गया है
फिर भी जिंदा है कविता
सियाचिन के बंकर में बैठा
एक सिपाही आंखें भिगो रहा है
कविता में एक धर्म है नफरत का
कविता में काबुल और काश्मीर के बाद
तुरत जो नाम आता है तिब्बत का
कविता के पठारों से गायब है शङ्रीला
कविता के कोहरे से झांक रहा शंभाला
कविता के रहस्य को मिल गया शांति का नोबेल पुरस्कार
जब कि एक बुद्ध कविता में करुणा ढूंढ रहा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अरे, नहीं मालूम था मुझे
हवा से पैदा होतीं हैं कविताएं !

कतई मालूम नहीं था कि
हवा जो सदियों पहले लंदन के सभागारों
और मैन्चेस्टर के कारखानों से चलनी शुरू हुई थी
आज पेंटागन और ट्विन से होते हुए
बीजिंग के तहखानों में जमा हो गई है
कि हवा जो अपने सूरज को अस्त नही देखना चाहती
आज मेरे गांव की छोटी छोटी खिड़कियो को हड़का रही है

हवा के सामने कविता की क्या बिसात ?
हवा चाहे तो कविता में आग भर दे
हवा चाहे तो कविता को राख कर दे
हवा के पास ढेर सारे डालर हैं
आज हवा ने कविता को खरीद लिया है
जब कि एक बुद्ध कविता में करुणा ढूंढ रहा है
दूर गाजा पट्टी से आती है जब
एक भारी भरकम अरब कविता
कम्प्यूटर के आभासी पृष्ट पर
तैर जाती हैं सहारा की मरीचिकाएं
शैं-शैं करता
मनीकरण का खौलता चश्मा बन जाता है उस का सी पी यू
कि भीतर मदरबोर्ड पर लेट रही है
एक खूबसूरत अधनंगी यहूदी कविता
पीली जटाओं वाली
कविता की नींद में भूगर्भ की तपिश
कविता के व्यामोह में मलाणा की क्रीम
कविता के कुंड में देशी माश की पोटलियां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता की पठाल पे कोदरे की मोटी नमकीन रोटियां
कविता की गंध में,
आह !
कैसा यह अपनापा
कविता का तीर्थ यह कितना गुनगुना ...

जबकि धुर हिमालय में
यह एक ठंडा और बेरहम सरकारी क्वार्टर है
कि जिसका सीमेंट चटक गया है कविता के तांव से
जो मेरी भृकुटियों पर शिशिर गांठ सा तना हुआ है
जब कि एक माँ की बगल में एक बच्चा सो रहा है
और एक बुद्ध कविता में करुणा ढूंढ रहा है।

08-01-2010

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन सपनों को कौन गाएगा

सपने में गाता हूं एक प्रेम गीत
मेरी मुट्ठी में माईक बेहद ठंडा है
मुझे अपनी भारी खुरदुरी आवाज़ पर यकीन नहीं होता
एक लड़का ढीली पैंट और लम्बे बालों वाला
आडिएंस में उठा है
और झूम कर नाचा है

बाब मार्ले और बराक ओबामा
ने मेरे साथ हाथ मिलाया है
और हम सबने मिल कर
उस मंच से एक पहाड़ी गीत गाया है

सपने में बेहद मुलायम है उन की घुंघराली लटें
मैं ऊन कातने लगा हूं ऐसे
कि तकलियां चरखा हो गईं हैं
चरखे स्पिनिग मशीन
रफल, टसर और पशम का जंजाल है
एक बुनकर कबीर डूबा हुआ अपने 'पिटलूम' में
सूत की महीन तंत टटोल रहा
ताना बाना लपेट रहा सिकुड़ा हुआ कोकून में
मेरा सपना शहर के आऊट्स्कर्टस में
एक दागदार चेहरे वाला आशंकित आर्टीजन है

यह सपना मुझे सोचने की वजह देता है
इस सपने में हमेशा डूबा नहीं रह सकता
इस सपने से मुझे एक फ्लाईट मिलती है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक बेचैन मुक्तिबोध दिखता है
नेब्युला में विचरण करता
खोजता अद्भुत शक्तिमान द्युतिकण
कैसे साध रहा आग और बिजली को मेरा वह पुरखा
खींच रहा तनी हुई पेशियों से बाहरी खगोल की तरंगें
बारहा कौंध जाती हैं सपने में
बेंजमिन फ्रेंकलिन की पतंगें

सपने में बारिश होती है
एक लाख अठसठ हजार तीन सौ पिचहत्तर डाल्फिन
तड़प कर गिरते हैं एक साथ पृथ्वी की ओर
हिरन हो जाते हैं दयार के गहरे नीले जंगलों में

एक सांवली औरत पीतल की बांसुरी बजाती है
उस की लंबी तान पर सवार
'भूंडा' खेलता हूं चूड़धार के उस पार
खड़ा पत्थर से पौड़िया
और पौड़िया से चौपाल तक
नीचे शिलाई की तराई में हो हो करते हैं हाथ उठा कर
दढ़ियल कद्दावर 'खूंद'

बहुत संभल कर फिसल रहा हूं
मूंज की कच्ची अंगढ़ रस्सी पर
जो अब टूटी कि अब टूटी
इस ऊंचाई से गिरूंगा
हवा में ही प्राण निकल जाएंगे
पर मुझे करना ही है यह कारनामा
देवता का चुना हुआ बेड़ा हूं अभिशप्त
मेरा मरना शुभ होगा खूंदों के लिए
और मेरी बेवाओं बच्चों के लिए
सफेद कपड़ों में जो यहां से ऐसे दिखते हैं
जैसे मासूम भेड़ें और मेमने !

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस ऊंचाई से मुझे हिम्मत मिलती है और ऊंचा उड़ने की
इस ऊंचाई में एक अलग ही जहरीला रोमांच है
इस ऊंचाई से मुझे दृष्टि मिलती है नीचे की चीज़ें देखने की

एक 'गद्दी' दिखता है बदहवास
जिस की भेड़ें एक एक कर के गुम हो रही हैं
सपने में कोई राजा नहीं है
जहां गुहार लगाई जा सके
वो सारे के सारे कसाई उस के पहचाने हुए हैं
जिन्होंने उस का माल चुराया है
जो आस्तीनों में चापड़ और तेग छिपाए हैं
और ताकत की तरह खड़ा रहता उन के पीछे
पूरा एक बाजार ...
एक 'बणबला' घातक चांदनी रातों की
ठंडी तेजाबी आंखों से घूरती
पिछवाड़ा खाली और सामने से सालम जनानी
दाहिना स्तन बाए कांधे पर फरकाए हुए
बिखरे बाल, अलफ नंगी
कुत्ता ख़ामोश हो गया है
ऐसी मनहूस है यह घड़ी कि
अलाव भी बुझ गया है डेरे के बाहर
कि जलती टहनी उठा के बला को मार भगाया जाए
गद्दी का कमजोर हाथ चिपक गया है
उस की पसीजती छाती पर...
वह नुआड़ा गाना चाहता है
धूडू स्वामी की एंचली
उस के बोल नहीं फूट रहे
वह अपना चोला फाड़ देना चाहता है
उस के पूरे शरीर में कांटे चुभ रहे हैं

एक दहशत है इस गद्दी के सपने में
और एक हिदायत
लगातार दौड़ते रहने की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि सपने में ही मिल सकता है
हवा में तैरता वह आख़िरी नायाब जीवाणु
और उस का बेटा जेनेटिक इंजीनियर
आई आई टी बेंगलुरू के क्लासरूम में
सब से अग्रिम पंक्ति में
सफेद शर्ट और नीली टाई वाला
उम्मीद के एक रौशन झौंके सा
स्मार्ट युवा कम्प्यूटर एनिमेटर
खड़ा कर रहा है एक विशाल रेवड़
फिर से बहुत पुराने टी - रेक्स
और आग उगलते ड्रेगनों का !

और मैं इस सपने को आगे नहीं गा सकता
इस सपने का प्रेम गीत
मेरी मुट्ठियों से भाप बन कर उड़ गया है
और आप इस सपने को नांच नहीं सकते
यह सपना अभी चुपचाप सुना और सुनाया जाना है

सुमनम, 19-12-2010

रफल, पशम	=	ऊन की किस्में
टसर	=	रेशम की किस्म
भूण्डा	=	प्राचीन हिमाचल में नर बलि का अनुष्ठान
खूँद	=	प्राचीन हिमाचल में खश जाति के गण
बेड़ा	=	जाति विशेष
गद्दी	=	हिमालय की एक चरवाहा जाति
बणवला	=	मिथकीय शक्ति जो चरवाहों के मवेशी लूटती है
धूडू स्वामी की ऐंचली	=	लोक परम्परा में शिव स्तुति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दख़ाल प्रतिनिधि

कुमार अनुपम, दिल्ली	-	09873372181
आदित्य प्रकाश, दिल्ली	-	09873146393
मनोज पाण्डेय, दिल्ली	-	09868000221
डा ए के अरुण, दिल्ली	-	09868809602
देवयानी भारद्वाज, जयपुर	-	09828112994
अर्पिता श्रीवास्तव, जमशेदपुर	-	09431761595
दीपक कबीर, लखनऊ	-	09415196146
माणिक जी, चित्तौडगढ़	-	09460711896
अमित उपमन्यु, बंबई	-	08600758430
पंकज मिश्रा, गोरखपुर	-	09415321479
चतुरानन ओझा, देवरिया	-	09838797596
विजय गौड़, देहरादून	-	09411580467
फिरोज ख़ान, भोपाल	-	07489887639
संजय गुप्ता, बनारस	-	09450535690

गीता बुक स्टाल, जेएनयू

यूनिवर्सल बुक डिपो, ग्वालियर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

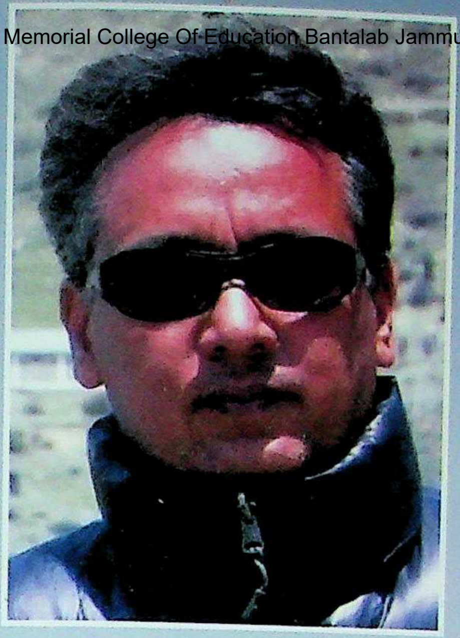

अजेय

18 मार्च 1965 को हिमाचल प्रदेश के लाहुल–स्पिति के एक गाँव सुमनम में जन्म। आरंभिक पढ़ाई केलंग से और उच्च शिक्षा चंडीगढ़ से।

पहल, तद्भव, ज्ञानोदय, वसुधा, उद्भावना, अकार सहित सभी प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं में कविताएं प्रकाशित। कविताओं का अंग्रेजी, नेपाली सहित अनेक भारतीय भाषाओं में अनुवाद, कविताओं का यह पहला संकलन।

आजकल हिमाचल प्रदेश के उद्योग विभाग में नौकरी, ब्लॉग जगत में भी सक्रियता ।

सम्पर्क

ई मेल : ajeyklg@gmail.com

ब्लॉग : http://www.ajeyklg.blogspot.in/

मोबाइल : 09418063644

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज की हिंदी कविता में अजेय की आवाज हमारे सीमित कर दिए भूगोल में बसे सुदूर हिमाचल की आवाज के रूप में स्थापित की जा रही हो, लेकिन कविता में विचार की अनन्त भूमिका को स्वीकारने वाले मुझ जैसे पाठकों के लिए वह बहुत निकट की आवाज है....कई बार तो खुद हमारे भीतर की आवाज। समकालीन हिंदी कविता की आत्मा जिस प्रगतिशील आन्दोलन में वास करती है, अजेय की कविताएं ठीक वहीं जन्म लेती हैं। बहुत दूर मुख्यधारा से एक कटे हुए... अब तक अनाम से रहे स्थान के कवि अजेय ने किसी लोक-विशेष को नहीं, उसमें रहने-बसने वाले मनुष्य और उसकी उत्कट जीवनशक्ति को आकार दिया है। मुझे बखूबी याद है कि अजेय को पहली बार हमारे समय की सबसे महत्वपूर्ण पत्रिका पहल ने अपने शुरूआती पन्नों में कविता में कुछ बिलकुल नया पा लेने के उत्सव की तरह छापा था। इसके बाद अजेय ने निरन्तर उस विश्वाास को बनाए रखा है, जिसे पहल के सम्पा दक ज्ञान जी ने रेखांकित किया था कहना ही होगा ज्ञानरंजन और पहल की अत्यन्त विचारवान और सक्रिय भूमिका से ही अस्सी के

बाद की हिंदी कविता का स्वरूप और भविष्य निर्धारित हुआ है और अजेय इसी कविता संसार के कवि हैं।

ये कविताएं बर्फ़ से ढंकी उस जमीन के वास्तंविक ताप का अहसास कराती हैं, जहां मनुष्य और प्र—ति आपस में घुलमिल जाते हैं। भोजवन और ब्यूंस की टहनियों के प्रदेश की इन कविताओं में आदमी को जिन्दा रखने वाली आंच है, एक गुनगुना सुखद अहसास है और मनुष्यता के पक्ष में एक लम्बी और जरूरी जिरह भी। हमें अब अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि बिना बहस के कोई भी कविता मर जाती है। यह देखना सुखद है कि अंतिम निष्कर्ष की भंगिमा के बजाए अजेय की ये कविताएं अपनी पढ़त में बहस की बहुत सारी गुंजाइश छोड़ती हैं इसे इन कविताओं की मनुष्यता कहा जाना चाहिए। ऐसे वक्त में जब कवि विद्वज्जन अपने से बाहर की जगहों का सम्मान करना छोड़ रहे हैं, तब अजेय की कविता विश्वास दिलाती है कि किसी भी तरह की रूढ़िवादी निजता और कट्टरता से बाहर सम्भव करने के लिए एक बहुत बड़ा संसार हमेशा मौजूद है और रहेगा। अजेय की ही पंक्ति का सहारा लें तो वे 'सामूहिक ऊर्जा से आविष्ट स्नायुतंत्र' के कवि हैं और यह भी सोचें कि आज की कविता में ऐसे कितने कवि हैं...

कवि के साथ ही दखल को भी मैं उसके पहले प्रकाशन और संचयन के लिए बधाई देता हूं।

-शिरीष कुमार मौर्य

दख़ल प्रकाशन, ग्वालियर

302, आई-3, विंडसर हिल्स, सिटी सेंटर एक्सटेंशन,
ग्वालियर, मध्यप्रदेश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant